



लोकहितार्थं सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

श्रेय

वर्ष : 24

वार्षिक अंक : 2019-20



**प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम) का कार्यालय
मध्य प्रदेश, ग्वालियर**



चौंसठ योगिनी मंदिर

चौंसठ योगिनी मंदिर भारतीय शिल्प एवं वास्तु कला का अद्वितीय उदाहरण है। यह मंदिर मध्य प्रदेश राज्य के मुरैना जिला के मितावली-पड़ावली गाँव में स्थित है। यह एक योगिनी मंदिर है जो चौंसठ योगिनियों को समर्पित हैं तथा इस मंदिर के आंतरिक भाग में 64 छोटे कक्ष हैं। सभी 64 कक्षों में शिवलिंग के साथ एक योगिनी की प्रतिमा स्थापित है। इसी कारणवश इसका नाम चौंसठ योगिनी मंदिर पड़ा है। मंदिर के मुख्य परिसर में एक विशाल शिव मंदिर है। स्थानीय शिव भक्तों की मान्यताओं के आधार पर यह मंदिर एकट्टसो अथवा इंकतेश्वर महादेव मंदिर के नाम से भी जाना जाता है।

चौंसठ योगिनी मंदिर का निर्माण 9 वीं शताब्दी में तत्कालीन प्रतिहार क्षत्रिय राजाओं द्वारा करवाया गया था। मंदिर के निर्माण में लाल-भूरे बलूना पत्थरों का उपयोग किया गया है जो कि मितावली क्षेत्र में पाए जाते हैं। मंदिर का आकार गोलाकार है और यह समतल भूमि से अलग एक पहाड़ी पर करीब सौ फीट की ऊंचाई पर स्थित है। किंवदंती है कि यह मंदिर सूर्य के गोचर के आधार पर ज्योतिष और गणित में शिक्षा प्रदान करने का स्थान था। यह भी प्रसिद्ध है कि पूर्व में यह मंदिर तंत्र साधनाओं हेतु तांत्रिकों का प्रमुख साधना स्थल रहा है। मंदिर के मुख्य भाग में पत्थरों की पट्टियों के आवरण हैं जिनमें वर्षा जल को संचित करने हेतु छिद्र हैं, जिनसे होकर वर्षा का जल एक भूमिगत भंडार में एकत्रित होता है। इसके साथ ही पाइप लाइन के माध्यम से भी वर्षा का जल छत से सीधे भूमिगत भण्डार तक पहुँचता है जो प्राचीन काल में जल संरक्षण का अद्भुत उदाहरण है।

मंदिर की संरचना आस-पास के क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति को ध्यान में रखते हुए पूर्णतः वैज्ञानिक पद्धति से की गई है। इसका प्रमाण इस बात से भी मिल जाता है कि कई भूकम्प के झटके झेलने के बाद भी यह मंदिर आज तक सुरक्षित है। कई इतिहासकारों का ऐसा भी मानना है कि हमारे संसद भवन की संरचना इसी मंदिर की संरचना से प्रेरित है। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा इस मंदिर को एक प्राचीन और ऐतिहासिक स्मारक घोषित किया गया है।



श्रेय

वार्षिक अंक 2019-20

संरक्षक

डी. साहू

प्रधान महालेखाकार
लेखापरीक्षा-प्रथम, मध्यप्रदेश, ग्वालियर



प्रकाशक

जितेन्द्र तिवारी

उप महालेखाकार (प्रशासन)



संपादक मंडल

संपादक

स्वर्णलता गुप्ता

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी कक्ष)

संजीव कुमार झांजी

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
हिंदी कक्ष

हरिओम कुमार

कनिष्ठ अनुवादक
हिंदी कक्ष

कपिल कांत पाराशर

वरिष्ठ लेखापरीक्षक
हिंदी कक्ष

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं, उनसे कार्यालय अथवा संपादक मंडल की सहमति आवश्यक नहीं है।

अपना लेख एवं सुझाव वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी, हिन्दी कार्यान्वयन कक्ष, प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम) का कार्यालय, मध्यप्रदेश, ऑडिट भवन, झाँसी रोड, ग्वालियर-474002 को दो प्रतियों में भेजें।

अनुक्रम

क्र.	रचना / लेख / व्यंग्य	रचनाकार / लेखक	पृष्ठ संख्या
	संदेश		
	प्रकाशकीय		
	संपादकीय		
1.	मांडू	आत्मा श्रीवास्तव	: 01 :
2.	जल महोत्सव	शाहमीर खान	: 04 :
3.	सहकारी संस्थाएँ - उद्देश्य एवं कार्य प्रणाली	अमरेश कुमार	: 06 :
4.	सफल जीवन हेतु चार व्यक्तिगत संपदायें	प्रफुल्ल त्रिपाठी	: 09 :
5.	किसे कहूँ मुबारक	सूर्यमणि कुमार	: 10 :
6.	पूरी तरह समाऊंगी मैं	ज्योति जौहरी	: 11 :
7.	घर पे मेरे	दीक्षा चौहान	: 11 :
8.	पत्नी का प्रेम	भरत प्रताप सिंह सिकरवार	: 12 :
9.	मानव हूँ, मानव पर कविता लिखती हूँ	अर्चना मानव	: 13 :
10.	जो उत्कृष्ट नहीं है, ईश्वर तक नहीं पहुँच सकता	श्रीकृष्ण बाथम	: 14 :
11.	आत्ममंथन	अर्चना मानव	: 16 :
12.	अधूरे ख्वाब हों पूरे	अल्का जैन, 'शरर'	: 18 :
13.	तुलसी प्रदूषण से बचाये	सारिका शर्मा	: 19 :
14.	मानवीय परिवर्तन - एक कटाक्ष	अभिषेक त्रिपाठी	: 21 :
15.	बेटियों का हो 'कल' और 'आज'	हरिओम कुमार	: 23 :
16.	पूजा के बारह फूल	मोहन चंद्र गुप्ता	: 24 :
17.	अज्ञात शक्ति	पारस कुमार कोयड़	: 24 :
18.	किन्नर-एक अभिशाप	मनोज मधुकर कस्तूर	: 25 :
19.	वो मरती हुई इंसानियत	मनोज मधुकर कस्तूर	: 28 :
20.	कृति-4	दीपक देवलिया	: 29 :
21.	हिंदी लेखन की सामान्य भ्रांतियाँ/गलतियाँ	धनंजय कुमार	: 30 :
22.	तारों की छांव में दुर्ग विजय	सुदेश अरोरा	: 34 :
23.	समझ	अनामिका त्रिपाठी	: 37 :
24.	साहब का सत्य से साक्षात्कार	आकाश सिंह	: 40 :



संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है कि प्रधान महालेखाकार का कार्यालय, मध्य प्रदेश, ग्वालियर द्वारा राजभाषा हिंदी की प्रगति व उत्थान को समर्पित पत्रिका 'श्रेय' का निरंतर प्रकाशन किया जा रहा है।

शासकीय कार्यालय में पत्रिका का प्रकाशन राजभाषा हिंदी सम्बन्धी गतिविधियों के वृहत प्रचार हेतु एक औपचारिक मंच प्रदान करने के साथ ही कार्मिकों की रचनाधर्मिता एवं लेखन क्षमता को उजागर करने में अतुलनीय भूमिका का निर्वहन करती है। पत्रिका का प्रकाशन जहां एक ओर कार्यालय में कार्यरत कार्मिकों के भाषाई अंतर को दूर करने में सहायक सिद्ध होता है वहीं दूसरी ओर राजभाषा हिंदी के प्रति पाठकों की सोच, समझ व ज्ञान को भी विकसित करता है।

मैं प्रधान महालेखाकार का कार्यालय, मध्यप्रदेश, ग्वालियर के प्रयासों की सराहना करती हूँ जो कार्यालयीन पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में अथक रूप से निरंतर प्रयासरत है।

मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन व उज्ज्वल भविष्य के लिए अपनी मंगलकामनाएं प्रेषित करती हूँ।

सरोज पुनहानी

सरोज पुनहानि

**उप नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक
(मानव संसाधन / प्रशिक्षण)**



लोकहितार्थं सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest



संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि प्रधान महालेखाकार का कार्यालय, मध्यप्रदेश, ग्वालियर अपनी वार्षिक हिंदी पत्रिका 'श्रेय' के 24 वें अंक का प्रकाशन कर रहा है। लेखन का मुख्य उद्देश्य हिंदी भाषा के माध्यम से भावनात्मक अभिव्यक्ति करना, सृजनात्मक लेखन कौशल विकसित करना एवं राजभाषा हिंदी को सशक्त बनाना है। आपकी पत्रिका 'श्रेय' इस उद्देश्य को पूर्ण करने का एक सरल एवं सशक्त माध्यम है।

मैं 'श्रेय' के सभी रचनाकारों, पाठकों एवं संपादक मण्डल के सभी सदस्यों को अपनी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करती हूँ तथा इस पत्रिका के स्वर्णिम भविष्य की कामना करती हूँ।

वाणी श्रीराम

वाणी श्रीराम

अपर उप नियंत्रक-महालेखापरीक्षक
(मध्य क्षेत्र)



सत्यमेव जयते

भारत सरकार
वित्त मंत्रालय
व्यय विभाग

GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF FINANCE
DEPARTMENT OF EXPENDITURE



संदेश

आपके कार्यालय की पत्रिका 'श्रेय' के 24वें अंक में अपना संदेश प्रेषित करते हुए मुझे आनंद की अनुभूति हो रही है। आपकी पत्रिका अपनी साहित्यिक यात्रा पर निरंतर अग्रसर है और इसमें आप सबका बहुमूल्य सहयोग बेहद सराहनीय है।

राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में कार्यालयीन पत्रिकाओं का योगदान अतुलनीय है। कार्यालय में रचनात्मक वातावरण तैयार करने तथा कार्मिकों में राजभाषा हिंदी के प्रति निष्ठा जाग्रत करने में कार्यालयीन पत्रिकाओं का महत्व दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। पत्रिका में प्रकाशित साहित्यिक, समसामयिक, ज्ञानवर्धक व मनोरंजक रचनाएं विभिन्न श्रेणी के पाठकों की पठन-पाठन रुचि को जागृत कर पोषित करती हैं। 'क' क्षेत्र से संबद्ध होने के कारण राजभाषा के उत्थान के प्रति हमारा उत्तरदायित्व और अधिक बढ़ जाता है। यह हमारा नैतिक कर्तव्य है कि हम न केवल कार्यालय में अपितु कार्यालय के बाहर भी राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए सदैव सजग व जागरूक रहते हुए औरों को भी प्रेरित करते रहें।

राजभाषा का इच्छित स्वरूप, सम्मान व स्थान हम सबके सार्थक एवं पारस्परिक सहयोग से ही संभव है। मुझे पूरी उम्मीद है कि आपके कार्यालय की पत्रिका 'श्रेय' सदैव इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु समर्पित रहेगी।

शुभकामनाओं सहित।

मीरा स्वरूप

मीरा स्वरूप
अपर सचिव



लोकहितार्थं सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest



संदेश

हिन्दी पत्रिका 'श्रेय' के 24 वें अंक के प्रकाशन के अवसर पर सभी सहकर्मियों का बहुत-बहुत अभिनंदन है।

हिन्दी को राजभाषा के रूप में 15 सितम्बर 1949 को घोषित किया गया, परन्तु हिन्दी सभी के दिलों में सदियों से राज करती रही है। हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार और विकास के क्षेत्र में हिन्दी पत्रिका 'श्रेय' एक महत्वाकांक्षी प्रयास है।

विगत 24 वर्षों में इस कार्यालय के कार्यों में उतार-चढ़ाव के बावजूद प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी कार्यालय के सभी साथी गणों ने पूरी ईमानदारी से पत्रिका के प्रकाशन में अपना योगदान दिया है। कोरोना महामारी काल में जब पूरा विश्व कोरोना की छाया में पीड़ित है उस समय में भी कार्यालय की हिन्दी के प्रति श्रद्धा, सम्मान एवं प्रतिबद्धता कतई कम नहीं हुई है। यह दर्शाता है कि ग्वालियर स्थित हमारे कार्यालय में हिन्दी के प्रति सच्ची श्रद्धा और निष्ठा अभी भी उतनी ही मजबूत है जितनी 24 वर्ष पहले श्रेय के प्रकाशन में थी।

मुझे पूरा विश्वास है कि आगामी वर्षों में भी हिन्दी का प्रचार एवं प्रसार इस कार्यालय द्वारा वैसे ही प्रगति करता रहेगा।

डॉ. साहू

डॉ. साहू

प्रधान महालेखाकार



प्रकाशकीय

वर्ष भर की सुंदर यादों एवं साहित्य से परिपूर्ण हमारे कार्यालय की वार्षिक हिंदी पत्रिका 'श्रेय' के 24वें अंक के प्रकाशन की इस मधुर बेला में मुझे अत्यन्त प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है।

संविधान के अनुच्छेद 351 के अंतर्गत राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार एवं विकास करना हम सबका संवैधानिक दायित्व है। इस दायित्व के निर्वहन में विभागीय हिंदी पत्रिकाओं का योगदान सराहनीय है। इस कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'श्रेय' भी इस दिशा में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

राजभाषा पत्रिका श्रेय की रचनाओं एवं पत्रिका के स्तर में जो निरंतर उत्कृष्टता रहती है उसके लिए रचनाकार एवं संपादक मण्डल निश्चय ही बधाई के पात्र हैं।

पत्रिका के माध्यम से कार्यालय के कार्मिकों में जो राजभाषा के प्रति प्रेम एवं समर्पण का भाव जागृत हुआ है, वह निरंतर बना रहे, यही मेरी कामना है।

जितेन्द्र तिवारी

जितेन्द्र तिवारी

उपमहालेखाकार (प्रशासन)



लोकहितार्थं सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest



सम्पादकीय

यह बहुत ही हर्ष का विषय है कि कार्यालयीन पत्रिका 'श्रेय' का अगला अंक प्रकाशित हो रहा है। मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि पूर्व अंकों की भांति ही प्रस्तुत अंक भी आप सभी की उम्मीदों पर बिल्कुल खरा उतरेगा व आप सबकी पाठन अभिरुचि को पूर्णतः संतुष्ट करेगा। कार्यालयीन पत्रिकाएं राजभाषा हिंदी के विकास में बहुत ही अहम भूमिका निभाती हैं। राजभाषा का विकास न केवल हमारा संवैधानिक दायित्व है, अपितु हम सभी का नैतिक कर्तव्य भी है। यह हमारे लिए निस्संदेह ही गौरव का विषय है कि राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार को समर्पित हमारी कार्यालयीन पत्रिका 'श्रेय' निरंतर ही राजभाषा के उत्थान में अपना बहुमूल्य योगदान देती रही है।

'क' क्षेत्र के अंतर्गत होने के कारण, राजभाषा के उत्थान में हमारी भूमिका और अधिक अहम हो जाती है। अतः यह अत्यंत आवश्यक है कि न केवल कार्यालय प्रांगण में वरन् अपने घर, आस-पास और सामाजिक परिवेश में भी हम हिंदी का प्रयोग पूरे सम्मान के साथ करें। हिंदी ही एक मात्र ऐसी भाषा है जिसमें अन्य भाषाओं के शब्दों को भी सरलता एवं सहजता से आत्मसात करने की अतुलनीय क्षमता है और इस प्रकार सम्पूर्ण देश व देशवासियों को एक सूत्र में बाँधने के दैवीय गुण से परिपूर्ण है। हिंदी का विकास समग्र देश व देशवासियों का विकास है। अतः हिंदी के विकास में हम सबको ही अपनी सहभागिता सुनिश्चित करनी चाहिए।

प्रस्तुत अंक में विविध प्रकार के ज्ञानवर्धक व रोचक लेख, कहानी व कविताओं का समावेश किया गया है। मुझे पूरी उम्मीद है कि पत्रिका में समाहित रचनाएँ आप सभी का मनोरंजन करेंगी व हिंदी भाषा की समझ में सहायक सिद्ध होंगी। भविष्य में पत्रिका को और भी बेहतर बनाने के लिए आपके बहुमूल्य सुझाव अपेक्षित हैं।

स्वर्णलता

स्वर्णलता गुप्ता

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी कक्ष)



मांडू



श्रीमती आत्मा श्रीवास्तव

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

मांडू या माण्डवगढ़, धार जिले के माण्डव क्षेत्र में स्थित एक प्राचीन शहर है। यह भारत के पश्चिमी मध्यप्रदेश के मालवा क्षेत्र में स्थित है। यह इंदौर शहर से 97 कि.मी. दूर स्थित है। यह 11 वीं शताब्दी में, मांडू तारागंगा या तरंगा राज्य का उप भाग था। इसे परमारों के काल में प्रसिद्धि प्राप्त हुई और फिर 13 वीं शताब्दी में यह क्षेत्र मुस्लिम शासकों के अधीन आ गया, जहाँ से इसका स्वर्णकाल प्रारम्भ हो गया। विन्ध्याचल पर्वत श्रृंखला में स्थित होने के कारण, यह बाह्य आक्रमणों से बहुत हद तक सुरक्षित था।

आज यह एक पर्यटन स्थल के रूप में प्रसिद्ध है। हजारों की संख्या में सैलानी यहाँ के दर्शनीय स्थलों को देखने आते हैं। मांडू विन्ध्य की पहाड़ियों में 2000 फीट की ऊँचाई पर स्थित है। यह मूलतः मालवा के परमार राजाओं की राजधानी रहा है। तेरहवीं शताब्दी/सदी में मालवा के सुल्तानों ने इसका नाम शादियाबाद यानि 'खुशियों का शहर' रख दिया था। वास्तव में यह जगह इस नाम को सार्थकता प्रदान करती है। यहाँ के दर्शनीय स्थल वास्तुकला के उत्कृष्टतम नमूने हैं। खिलजी शासकों द्वारा बनाए गए इस नगर के महलों की स्थापत्य कला देखने लायक है।

मांडू मध्यप्रदेश का एक ऐसा पर्यटन स्थल है, जो रानी रूपमती और बादशाह बाज बहादुर के अमर प्रेम का साक्षी है। यहाँ के खंडहर व इमारतें इतिहास के उन झरोखों के दर्शन कराते हैं, जिसमें मांडू के शासकों की विशाल समृद्ध विरासत व शानो-शौकत से रूबरू हुआ जा सकता है।

कहने को तो लोग मांडू को 'खंडहरों का गाँव' भी कहते हैं, परंतु इन खंडहरों के पत्थर भी बोलते हैं और सुनाते हैं हमें इतिहास की अमर गाथा। हरियाली की खूबसूरत चादर ओढ़े मांडू विदेशी पर्यटकों के लिए विशेष तौर पर एक सुंदर पर्यटन स्थल रहा है। यहाँ के शानदार व विशाल दरवाजे मांडू में प्रवेश के साथ ही इस तरह स्वागत करते प्रतीत होते हैं मानो किसी समृद्ध शासक के नगर में प्रवेश किया जा रहा हो।

मांडू में प्रवेश के घुमावदार रास्तों के साथ ही मांडू के बारे में जानने की तथा इसकी खूबसूरत इमारतों को देखने की जिज्ञासा चरम सीमा तक पहुँच जाती है। यहाँ के विशाल इमली के पेड़ व मीठे सीताफलों से लदे पेड़ों को देखकर मुँह में पानी आना स्वाभाविक है। यहाँ की विशेष इमली के स्वाद के चटखारे लिए बगैर भला कैसे मांडू यात्रा पूरी हो सकती है। मांडू दर्शन करने पर एक बार अवश्य ही यहाँ की इमली, सीताफल व कमलगट्टे का स्वाद चखा जाना चाहिए।

मांडू पहाड़ों व चट्टानों का इलाका है, यहाँ पर ऐतिहासिक महत्व की कई पुरानी इमारतें हैं। मालवा के राजपूत परमार शासक भी बाहरी आक्रमण से अपनी रक्षा के लिए मांडू को एक महफूज स्थान मानते थे। मध्यप्रदेश के ऐतिहासिक स्थल मांडू में कई दार्शनिक स्थल हैं, जिसमें से निम्न अत्यधिक प्रसिद्ध हैं -

स्वागत करते प्रवेश द्वार: मांडू में लगभग 12 प्रवेश द्वार हैं, जो मांडू से 45 किलोमीटर के दायरे में मुंडेर के समान निर्मित हैं। इन दरवाजों में 'दिल्ली दरवाजा' प्रमुख है। यह मांडू का प्रवेश द्वार है। इसका निर्माण सन् 1405 से 1407 के मध्य में हुआ था। यह खड़ी ढाल के रूप में घुमावदार मार्ग पर बनाया गया है, जहाँ पहुँचने पर हाथियों की गति धीमी हो जाती थी। इस दरवाजे में प्रवेश करते ही अन्य



दरवाजों की शुरुआत और साथ ही मांडू दर्शन आरंभ हो जाता है। मांडू के प्रमुख दरवाजों में आलमगीर दरवाजा, भंगी दरवाजा, रामपोल दरवाजा, जहाँगीर दरवाजा, तारापुर दरवाजा आदि अनेक दरवाजे हैं।

जहाज महल : जहाज महल का निर्माण 1469 से 1500 ईस्वी के मध्य हुआ था। यह महल जहाज की आकृति में दो कृत्रिम तालाबों, 'कपूर तालाब' व 'मुंज तालाब' के मध्य में बना हुआ है। लगभग 120 मीटर लंबे इस खूबसूरत महल को दूर से देखने पर ऐसा लगता है मानों तालाब के बीच में कोई सुंदर जहाज तैर रहा हो। संभवतः इसका निर्माण शृंगारप्रेमी सुल्तान ग्यासुद्दीन खिलजी ने विशेष तौर पर अंतःपुर (महिलाओं के लिए बनाए गए महल) के रूप में किया था।

हिंडोला महल : हिंडोला महल मांडू के खूबसूरत महलों में से एक है। हिंडोला का अर्थ होता है 'झूला'। इस महल की दीवारें कुछ झुकी होने के कारण यह महल हवा में झूलते हिंडोले के समान प्रतीत होता है। अतः इसे हिंडोला महल के नाम से जाना जाता है। हिंडोला महल का निर्माण ग्यासुद्दीन खिलजी ने 1469 से 1500 ईस्वी के मध्य करवाया था। यह सभा भवन के रूप में निर्मित सुंदर महल है। महल के सुंदर खंभे इसे और भी खूबसूरती प्रदान करते हैं। इस महल के पश्चिम में छोटे-बड़े कई सुंदर महल हैं। इसके समीप ही चंपा बावड़ी है।

रानी रूपमती का महल : रानी रूपमती के महल को देखे बगैर मांडू दर्शन अधूरा-सा है। 365 मीटर ऊंची खड़ी चट्टान पर स्थित इस महल का निर्माण बादशाह बाजबहादुर ने रानी रूपमती के लिए कराया था। इसी के साथ ही सैनिकों के लिए मांडू की सुरक्षा व्यवस्था पर नजर रखने के लिए बेहतर स्थान के रूप में भी इसका प्रयोग किया जाता था। ऐसा कहा जाता है कि रानी रूपमती सुबह उठकर माँ नर्मदा के दर्शन करने के बाद ही अन्न-जल ग्रहण करती थीं। अतः रूपमती के नर्मदा दर्शन को सुलभ बनाने हेतु बाजबहादुर ने ऊँचाई पर स्थित इस महल का निर्माण कराया था।

बाज बहादुर का महल : बाज बहादुर के महल का निर्माण 16 वीं शताब्दी में किया गया था। इस महल में विशाल आँगन व हॉल बने हुए हैं। यहाँ से हमें मांडू का सुंदर नजारा देखने को मिलता है।

जामा मस्जिद (जामी मस्जिद) : मांडू का मुख्य आकर्षण जामा मस्जिद है, इस विशाल मस्जिद का निर्माण कार्य होशंगशाह के शासनकाल में आरंभ किया गया था तथा महमूद प्रथम के शासनकाल में यह मस्जिद बनकर तैयार हुई थी। इस मस्जिद की गिनती मांडू की नायाब व शानदार इमारतों में की जाती है। यह भी कहा जाता है कि जामा मस्जिद डेमास्कस (सीरिया देश की राजधानी) की एक प्रसिद्ध मस्जिद का प्रतिरूप है।

अशरफी महल : जामा मस्जिद के सामने ही अशरफी महल है। अशरफी का अर्थ होता है 'सोने के सिक्के'। इस महल का निर्माण होशंगशाह खिलजी के उत्तराधिकारी मोहम्मद खिलजी ने इस्लामिक भाषा के विद्यालय (मदरसा) के लिए किया था। यहाँ विद्यार्थियों के रहने के लिए कई कमरों का निर्माण भी करवाया गया था।

होशंगशाह की कब्र : होशंगशाह की कब्र, जो कि भारत में मार्बल से बनाई हुई ऐसी पहली कब्र है, जिसमें आपको अफगानी शिल्पकला का बेहतर नमूना देखने को मिलता है। यहाँ के गुंबज, बरामदे तथा मार्बल की जाली आदि की खूबसूरती बेजोड़ है।

रेवा कुंड : रेवा कुंड का निर्माण बादशाह ने अपनी प्रियसी रानी रूपमती के महल में पानी की पर्याप्त व्यवस्था के स्रोत के रूप में किया था।

नीलकंठ : यहाँ शिवजी का मंदिर है जिसमें अंदर जाने के लिए सीढ़ी उतरकर जाना पड़ता है। इस मंदिर के सौंदर्य को शब्दों में बयाँ नहीं किया जा सकता। ऊपर पेड़ों से घिरे तालाब से एक धार नीचे शिवजी का अभिषेक करती जाती है।

नीलकंठ महल : मंदिर के समीप स्थित इस महल का निर्माण शाह बदगा खान ने अकबर की हिंदू पत्नी के लिए करवाया था।



इसकी दीवारों पर अकबर कालीन कला के नमूने देखे जा सकते हैं।

हाथी महल, दरिया खान की मजार, दाई का महल, दाई की छोटी बहन का महल, मलिक मघत की मस्जिद और जाली महल भी दर्शनीय हैं। यहाँ ईको पॉइंट पर पर्यटकों की भीड़ लगी रहती है। लोहानी गुफाएँ और उनके सामने स्थित सनसेट पॉइंट भी पर्यटकों को खींचता है।

मध्यप्रदेश राज्य में मांडू एक बहुत ही खूबसूरत स्थान है। यहाँ आपको शहरी जीवन से दूर, सुकून से जिन्दगी गुज़ारने के लिए पर्याप्त आकर्षण के केन्द्र हैं। जीवन में तनाव एवं परेशानियों को दरकिनार करते हुए प्रकृति की गोद में कुछ लम्हे शान्ति के साथ बिताने हेतु मांडू सबसे सही जगह है। एक बार अवश्य देखने लायक जगह 'मांडू'।

मांडू का विहंगम दृश्य





जल महोत्सव

■
शाहमीर खान

डी.ई.ओ.

‘भारत का हृदय’ कहे जाने वाले मध्य प्रदेश राज्य के खंडवा जिले में इंदिरा सागर बांध (भारत का सबसे बड़ा जलाशय) स्थित है। इस बांध के किनारे ‘हनुवंतिया द्वीप’ प्राकृतिक दृश्यों का एक शानदार स्थल है। अपने साहसिक पर्यटन के लिए भी राज्य को प्रसिद्ध बनाने के प्रयासों में, मध्य प्रदेश पर्यटन ने अन्वेषित और अछूते हुए हनुवंतिया द्वीप को विकसित कर इसे अपने आप में एक छोटे शहर के रूप में बदल दिया। मध्य प्रदेश राज्य पर्यटन विकास निगम के द्वारा हनुवंतिया में जल महोत्सव का आयोजन किया जाता है। कुछ ही समय में, जल महोत्सव मध्यप्रदेश पर्यटन का एक बहुत महत्वपूर्ण आयोजन बन गया है।

मध्य प्रदेश पर्यटन विभाग ने जल महोत्सव के माध्यम से पानी के महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए यह पहल सन् 2016 में शुरू की थी, जो कि इंदिरा सागर बांध की सुंदर पृष्ठभूमि के करीब सांस्कृतिक प्रदर्शन और साहसिक गतिविधियों का एक आकर्षक मिश्रण है। जल महोत्सव प्राकृतिक, रोमांच, भोजन, कला और आश्चर्य में भरा हुआ एक त्यौहार है। यहां रोमांच की भावना आश्चर्यचकित करती है, यहां शहरी जीवन के प्रदूषण और तनाव से मुक्ति मिलती है एवं यहां प्राकृतिक सुन्दरता उजागर होती है। यह जल-महोत्सव की भव्यता है।

पर्यटन विभाग द्वारा दिनांक 20 दिसम्बर 2019 से 20 फरवरी 2020 तक एक बार फिर जल महोत्सव का आयोजन किया गया। मध्य प्रदेश राज्य के खण्डवा रेलवे स्टेशन से 50 किलोमीटर की दूरी पर स्थित हनुवंतिया टापू पर जल महोत्सव का आयोजन किया जाता है। पिकनिक हेतु यह एक उपयुक्त स्थान है, जहाँ हर चीज का विशेष ध्यान रखा गया है। यहाँ विश्राम हेतु अत्यधिक सुंदर रूप से सुसज्जित भव्य तंबू तैयार किये जाते हैं, जिसमें प्राचीन रूप में समस्त आधुनिक सुविधाएँ उपलब्ध रहती हैं।

आसमान में सफेद बादल, ज़मीन में हरियाली और साथ में एकदम साफ चमकता पानी किसी का भी ध्यान आकर्षित करने के लिए पर्याप्त है। सूर्योदय के समय हरे-भरे पेड़ों और सुंदर नीले पानी के ऊपर सुबह की सुनहरी रोशनी को गिरता देख, लज़ीज नाश्ते का आनंद लेते हुए शहरी जीवन के समस्त तनाव और परेशानियों को भुलाया जा सकता है। यद्यपि भोजन एवं आराम हेतु यह तंबू अति लुभावने साबित होते हैं, किंतु जलोत्सव का मुख्य आकर्षण तो जल क्रीड़ा में निहित है।

विभिन्न प्रकार की थल, जल एवं नभ क्रीड़ाएं किसी को भी रोमांचित करने हेतु परिपूर्ण हैं। तेज़ी से चलती हुई नाव, रस्सी से बंधे हुए व्यक्ति को एकाएक आसमान की ऊंचाई पर ले जाती है और इस तरह पैरासेलिंग का लुत्फ उठाया जाता है। बोट रेसिंग एवं राफ्टिंग भी इस काव्य को आगे ले जाती हैं। जल क्रीड़ा के अतिरिक्त इसी प्रकार लैंड पैरासेलिंग का भी आनंद लिया जा सकता है। ऊँची-ऊँची दीवारों पर चढ़ना, कार रेसिंग, निशानेबाजी, रस्सी-खींच प्रतियोगिता एवं अन्य कई खेल, थल-क्रीड़ा को आगे बढ़ाते हैं। उक्त के अतिरिक्त पैरामोटर हॉट एयर बलून में बैठ कर पूरे जल महोत्सव का नज़ारा ऊंचाई से देखा जा सकता है। स्काई स्प्रिंग एवं ज़िपलाइन जैसी नभ क्रीड़ाएं एवं अन्य कई प्रकार की मनोरंजक गतिविधियाँ एक सुखद अनुभूति प्रदान करती हैं। रोमांच की भावना आश्चर्यचकित करती है एवं पूर्ण माहौल सुखद एवं खुशनुमा हो जाता है।

जल महोत्सव में हर उम्र, हर स्वभाव के व्यक्ति के लिए कुछ न कुछ सहेज कर रखा गया है। यहां इंसान इत्मिनान से प्रकृति की



सैर कर सकता है, द्वीप के चारो ओर घूम कर प्रकृति का अवलोकन करना, एक अलग ही अनुभव देता है। यदि वास्तव में सुखद अनुभव को एक और पायदान पर ले जाने की इच्छा पूर्ण करनी है तो बैलगाड़ी की सवारी कर आसापास के स्थानीय गांव का दौरा किया जा सकता है। प्राचीन काल का मुख्य यातायात साधन 'बैलगाड़ी' हनुवंतिया का एक लोकप्रिय आकर्षण है।

संध्या के समय लोक संगीत और नृत्य देखकर मध्य प्रदेश की संस्कृति से रूबरू होने का अवसर प्राप्त होता है, जिससे आत्मा को सुखद अनुभूति प्राप्त होती है। इसके अतिरिक्त समीप ही स्थित शिल्प बाजार में सुंदर हस्तशिल्प की वस्तुएं बेची जाती हैं, जिन्हें जल महोत्सव की यादें संजोने हेतु घर ले जाया जा सकता है।

यदि समुद्र तटों से अधिक किसी जलमार्ग की तलाश कहीं समाप्त होती है तो मध्य प्रदेश पर्यटन विकास निगम के जल महोत्सव में खत्म होती है। जल महोत्सव में शरीर, मन और आत्मा को मजबूत करने के लिए एवं रोज की आम जिन्दगानी से राहत लेकर जिंदगी से कुछ लम्हों को खुलकर जीने के लिए सभी स्रोत उपलब्ध हैं।

अविश्वसनीय जल महोत्सव, आनंदमय जल महोत्सव!





सहकारी संस्थाएं - उद्देश्य एवं कार्य प्रणाली



अमरेश कुमार

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

सहकारी संस्थाओं का उद्देश्य अपने सदस्यों में मितव्ययिता, आत्मनिर्भरता और सहयोग द्वारा उनकी आर्थिक एवं सामाजिक उन्नति करने का है। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु संस्था अपने सदस्यों में बचत करने की आदत उत्पन्न करने, सदस्यों से प्राप्त रकम का सुरक्षित विनियोजन का प्रबंध करने, सदस्यों को आवश्यकतानुसार उचित ब्याज पर ऋण देने की व्यवस्था करने जैसे कार्य करती है।

महालेखाकार कार्यालय, ऑडिट भवन, ग्वालियर में उपर्युक्त उद्देश्यों की पूर्ति हेतु एक सहकारी संस्था 'लेखापरीक्षा साख सहकारी संस्था मर्यादित, ग्वालियर' के नाम से कार्य कर रही है, जिसके सदस्य कार्यालय में कार्यरत अधिकारी/कर्मचारी हैं। इस संस्था के गठन, उद्देश्य, कार्यप्रणाली एवं अन्य गतिविधियों की संक्षिप्त जानकारी कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों के उपयोगार्थ नीचे वर्णित है।

गठन का इतिहास : सर्वप्रथम 2007 में यह संस्था पंजीयक कार्यालय, ग्वालियर द्वारा मध्यप्रदेश स्वायत्त सहकारिता अधिनियम 1999 के अधीन 'लेखापरीक्षा स्वायत्त साख सहकारिता मर्यादित ग्वालियर' के नाम से पंजीकृत हुई - जिसके संस्थापक सदस्य श्री सुजीत कुमार माईकल, श्रीमती श्रीकुमारी पिल्लई एवं श्री अमरेश कुमार सहित कुल 11 सदस्य थे। बाद में माह दिसंबर 2017 में उक्त सहकारिता के पंजीयन को निरस्त करते हुए पंजीयक कार्यालय, ग्वालियर द्वारा इसे मध्य प्रदेश सहकारी सोसायटी अधिनियम 1960 के अधीन 'लेखापरीक्षा साख सहकारी संस्था मर्यादित ग्वालियर' के नाम से पंजीकृत किया गया, जिसका पंजीयन क्रमांक डी.आर./जी.डब्ल्यू.आर./695 दिनांक 20.04.2017 है।

उद्देश्य एवं कार्य : संस्था का उद्देश्य कार्यालय के अधिकारियों-कर्मचारियों में, जो स्वेच्छा से इस संस्था के सदस्य बनते हैं, मितव्ययिता, आत्मनिर्भरता एवं सहयोग द्वारा उनका आर्थिक और सामाजिक उन्नति करने का है। इसके लिए संस्था निम्नलिखित कार्य करती है :-

1. सदस्यों में बचत करने की आदत उत्पन्न करना।
2. सदस्यों से प्राप्त रकम के सुरक्षित विनियोजन का प्रबंध करना।
3. सदस्यों को आवश्यकतानुसार उचित ब्याज दर पर ऋण देने की व्यवस्था करना।

कार्यप्रणाली : संस्था के सुचारू रूप से कार्य संचालन के लिए एक संचालक मंडल जिसका कार्यकाल 5 वर्ष का होता है, का गठन किया जाता है। संचालक मंडल में कुल 11 संचालक होते हैं, जिसमें से एक अध्यक्ष एवं दो उपाध्यक्ष होते हैं। संचालक मंडल के संचालकों का निर्वाचन मध्यप्रदेश राज्य सहकारी निर्वाचन प्राधिकारी द्वारा नियुक्त पंजीकरण एवं रिटर्निंग अधिकारी द्वारा विधिवत रूप से कराया जाता है। संचालक मंडल द्वारा संस्था के सदस्यों में से एक प्रबंधक की नियुक्ति की जाती है जो संचालक मंडल एवं अध्यक्ष के सामान्य नियंत्रण में कार्य करता है।

संचालक मंडल के अधिकार एवं कर्तव्य :

1. नए सदस्यों को सदस्यता प्रदान करना एवं उनके अंश स्वीकृत करना तथा सदस्यों के सदस्यता अंश वापसी प्रार्थना-पत्रों पर



विचार करना और स्वीकृत अथवा अस्वीकृत करना।

2. आमसभा द्वारा स्वीकृत बजट के अंतर्गत खर्च करना।
3. संस्था के कामकाज संबंधी शिकायतों की सूचना एवं उनका निराकरण करना।
4. सदस्यों के त्याग पत्र पर विचार करना, स्वीकार करना/निष्कासन पर निर्णय लेना।
5. प्रबंधक के कार्यों की जाँच करना, यह देखना कि संस्था के हिसाब या अन्य रजिस्टर ठीक ढंग से रखे जाते हैं।
6. आमसभा/विशेष आमसभा की बैठक बुलाना।
7. संस्था से संबंधित अन्य महत्वपूर्ण कार्य।

अध्यक्ष एवं उपाध्यक्ष की शक्तियां एवं कृत्य :-

1. संस्था के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु अध्यक्ष-उपाध्यक्ष वे समस्त सामान्य कार्य करेंगे एवं निर्णय लेंगे जो संस्था के हित में आवश्यक हो।
2. उपाध्यक्ष, अध्यक्ष की अनुपस्थिति में, उसके कार्य नहीं कर पाने की स्थिति में वे समस्त कार्य करेंगे जो संस्था के उद्देश्य के अनुरूप हो।
3. अध्यक्ष/उपाध्यक्ष, प्रबंधक के कार्यों पर पूर्ण नियंत्रण रखेगा। उनकी नियुक्ति करेगा, सेवा से हटाएगा, निलंबित कर सकेगा एवं जांच कर सकेगा।

प्रबंधक की शक्तियां एवं कृत्य :-

1. पंजीयक निर्देशों के अनुरूप संस्था के निर्धारित आवश्यक रजिस्ट्रों एवं कागजातों को व्यवस्थित एवं चालू रखना।
2. पावतियाँ, रसीदें, प्रमाणक, चेक एवं अन्य दस्तावेज तैयार करना एवं उन पर संचालक मंडल/अध्यक्ष द्वारा अधिकृत व्यक्ति से हस्ताक्षर कराना।
3. संस्था की ओर से सभी प्रकार के सामान्य पत्र व्यवहार करना।
4. आम सभा तथा संचालक मंडल की बैठक में उपस्थित रहना एवं उनकी कार्यवाही, कार्यवाही पुस्तिका में लिखना एवं कार्यवाही विवरण के नीचे उपस्थित सदस्यों से हस्ताक्षर कराना।
5. अन्य वे समस्त कार्य करना जो समय-समय पर संचालक मंडल या अध्यक्ष द्वारा सौंपे जाए।
6. संस्था के हित में आवश्यक निर्णय लेना।

अध्यक्ष एवं प्रबंधक का दायित्व :-

1. अध्यक्ष, वैतनिक और प्रबंधक संस्था का नगद रकम या संपत्ति का किसी भी प्रकार का दुरुपयोग करने और उसे हड़प लेने के लिए अथवा संस्था के कामकाज में हुई वित्तीय हानि के लिए उत्तरदायी होंगे।
2. अध्यक्ष/वैतनिक/प्रबंधक ऐसे विवरणों और विनिमय ब्यौरों को नियमित रूप से भेजने के लिए उत्तरदायी होंगे जो पंजीयक शासन या संबंधित प्राधिकारी द्वारा समय-समय पर निर्धारित किया जाए। वे लेखापरीक्षा निरीक्षण टीपों का संस्था को प्राप्त होने की तारीख से 45 दिन के अंदर निराकरण करेंगे।

संस्था का निर्वाचन :- मध्य प्रदेश राज्य सहकारी निर्वाचन प्राधिकारी, भोपाल द्वारा नियुक्त रिटर्निंग अधिकारी द्वारा इस संस्था का निर्वाचन विशेष साधारण सम्मेलन दिनांक 06.03.2019 में कराया जाकर रिटर्निंग अधिकारी की अध्यक्षता में संचालक मंडल की प्रथम बैठक दिनांक 12.03.2019 में अध्यक्ष/उपाध्यक्ष का निर्वाचन विधिवत रूप से संपन्न कराया गया।



वर्तमान संचालक मंडल के निर्वाचित सदस्यों (संचालकों) के नाम :-

क्र.	नाम एवं पदनाम	पद
1.	श्री जितेंद्र मोदी, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी, 01/10434	अध्यक्ष
2.	श्री अमरेश कुमार सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी, 02/10453	उपाध्यक्ष
3.	श्री स्वपन साहा, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी, 02/10279	उपाध्यक्ष
4.	श्रीमती आत्मा श्रीवास्तव, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी, 02/10473	संचालक
5.	श्री तनुज कुमार, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी, 02/10954	संचालक
6.	श्री राजेश कुमार, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी, 02/10576	संचालक
7.	श्री निरंजन सिंह राजपूत, वरिष्ठ लेखापरीक्षक, 03/10209	संचालक
8.	श्री रोशन कुमार बसया, वरिष्ठ लेखापरीक्षक, 03/11130	संचालक
9.	कु. रिकी घोष, वरिष्ठ लेखापरीक्षक, 03/10632	संचालक
10.	श्री राजेश कुमार, वरिष्ठ लेखापरीक्षक, 03/10470	संचालक
11.	श्री शेखर गौड़िया, एम.टी.एस., 05/10013	संचालक

संचालक मंडल द्वारा मनोनीत

1.	श्री रवि कुमार भगत, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी, 02/10802	प्रबंधक
----	---	---------

उक्त संचालक मंडल का कार्यकाल पाँच वर्ष का होगा। पाँच वर्ष की अवधि की गणना संचालक मंडल की प्रथम बैठक जिसमें अध्यक्ष/उपाध्यक्ष का चुनाव होता है, से की जाती है। इस प्रकार वर्तमान संचालक मंडल का कार्यकाल दिनांक 12.03.2019 से 11.03.2024 तक होगा। (मुख्यालय के पत्र दिनांक 07.08.2019 के परिप्रेक्ष्य में संचालक मंडल का कार्यकाल पांच वर्ष से घटाकर चार वर्ष करने का प्रस्ताव प्रक्रियाधीन है।)

आम सभा का आयोजन :- संस्था (सोसायटी) की आमसभा का आयोजन वित्तीय वर्ष की समाप्ति के पश्चात् छः महीने के भीतर अर्थात् 30 सितंबर से पहले किया जाता है। संस्था की द्वितीय आमसभा का आयोजन दिनांक 06.07.2019 को होटल एम्बियंस, रेलवे स्टेशन परिसर, ग्वालियर में आयोजित किया गया। आम सभा में संस्था के हित में अनेक प्रस्ताव पारित किए गए तथा साथ ही माह अप्रैल 2017 से जून 2019 के मध्य सेवानिवृत्त हुए सदस्यों एवं स्वर्गवासी सदस्यों के परिजनों को सम्मानित किया गया।

ऋण प्रदाय की सीमा एवं वसूली की रीति :-

- वर्तमान में संस्था द्वारा सदस्यों को अधिकतम राशि रु. 1,50,000/- तक साधारण ऋण तथा अधिकतम राशि रु. 25,000/- तक आकस्मिक ऋण उपलब्ध कराई जाती है।
- सामान्यतः साधारण ऋण की वसूली अधिकतम 30 माह तक एवं आकस्मिक ऋण की वसूली अधिकतम पांच माह में समान किश्तों में की जाती है।
- ऋण की राशि सदस्यों को संस्था के बैंक खाते से नेट बैंकिंग, चेक आदि के माध्यम से उनके खाते में सीधे ट्रांसफर की जाती है।

अंशदान, ऋण एवं ब्याज आदि के वसूली की प्रक्रिया :- संस्था द्वारा उनके समस्त बकाया जैसे अंशदान, ऋण तथा ब्याज आदि की वसूली उनके वेतन से की जाती है, जो संस्था के बैंक खाते में जमा होती है अर्थात् किसी प्रकार का नगद लेनदेन संस्था द्वारा नहीं किया जाता है।





सफल जीवन हेतु चार व्यक्तिगत संपदाये



प्रफुल्ल त्रिपाठी

वरिष्ठ लेखापरीक्षक

आज, हम में से बहुत से लोग अपने जीवन का सिर्फ 25% जी रहे हैं। हम सिर्फ अपने माइंड सेट और करियर ग्रोथ पर ध्यान दे रहे हैं जिससे हमारी कमाई बढ़ सके। हम व्यस्त हैं लेकिन व्यस्त होने का मतलब यह नहीं है कि हम उत्पादक हैं। नौकरी के बाद हम नीले प्रकाश उपकरणों में व्यस्त हैं जो मोबाइल, लैपटॉप, टेलीविजन इत्यादि हैं। हम हर बार सोशल मीडिया नोटिफिकेशन की जाँच करते हैं। हम टेलीविजन को बिस्तर पर आधा लेट कर देखते हैं। हम इससे सीख रहे हैं या नहीं, लेकिन हम खुद को व्यस्त रखते हैं। व्यस्त होने का मतलब यह नहीं है कि हम अपने दिन का सबसे महत्वपूर्ण काम कर रहे हैं। हम उन चीजों को नहीं कर रहे हैं जो हमें पूर्णतः आंतरिक खुशी की भावना देती हैं। हम उन लोगों का पीछा नहीं कर रहे हैं जो हमारे जीवन को अधिक सार्थक बनाने के लिए महत्वपूर्ण हैं। हमें उन चीजों पर भी ध्यान देना चाहिए जो पैसे से ज्यादा महंगी हैं। जीवन के चार क्षेत्र हैं जिन पर हमें ध्यान केंद्रित करना चाहिए और अपने दिन-प्रतिदिन के जीवन में आगे बढ़ना चाहिए, क्योंकि जैसा हम दिन जीते हैं वैसा ही हम जीवन जीते हैं। दिन हमारे लघु जीवन होते हैं। चार क्षेत्र या साम्राज्य जिसमें हमें खुद को विकसित करना चाहिए वो मानसिक, भावनात्मक, शारीरिक और आध्यात्मिक जीवन है। एक आदर्श मानसिकता के लिए, हमारे पास महान विचार, दृष्टिकोण और दृष्टि होनी चाहिए, जो हमें कार्रवाई करने के लिए प्रेरित करती है। हमारी बार-बार की जाने वाली क्रियाएं आदत बन जाती हैं, आदतें चरित्र, कौशल बनाती हैं। जैसे किताब पढ़ना एक आदत है, जो हमें ज्ञानवान बनाती है। कौशल के साथ हम अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में सक्षम होते हैं जो हमें वित्तीय स्वतंत्रता देता है। टूटे हुए दिल के साथ हम महान काम नहीं कर सकते। क्रोध और दिल में निराशा के साथ, हम अच्छे संबंध नहीं बना सकते। उदास दिल के साथ, हम अपने लक्ष्यों को प्राप्त नहीं कर सकते। अच्छे दोस्तों और परिवार के साथ अपनी भावनाओं को साझा करके, हम आराम महसूस कर सकते हैं। हम आज की दुनिया में अकेले हो रहे हैं। हम सिर्फ सोशल नेटवर्किंग प्लेटफॉर्म में साझा, पसंद और टिप्पणी करके आभासी दुनिया में रह रहे हैं। हमारे पास वह कंपन और सकारात्मक ऊर्जा नहीं है जो हमें परिवार और अच्छे दोस्तों से मिलती है। हमें अपने परिवार के साथ अच्छा/पर्याप्त समय बिताना चाहिए और अपने दोस्तों के साथ जोर से हँसना चाहिए। हमें अपने प्रियजनों के साथ पर्यटन के लिए जाना चाहिए जो हमारी भावनाओं को रिचार्ज कर सकते हैं, ऐसा करके हम अपनी निराशा, क्रोध और अवसाद को छोड़/कम कर सकते हैं और सकारात्मक रूप से विकसित हो सकते हैं और अपने जीवन का एक और 25% जीवन जी सकते हैं, जो हमारे जीवन के चार स्तम्भों में से एक है। जैसा कि कहा जाता है, 'स्वस्थ मन स्वस्थ शरीर में निवास करता है।' व्यायाम करने और अपने शरीर को स्वस्थ रखने के द्वारा, हम अपने जीवन का एक और बड़ा साम्राज्य हासिल कर सकते हैं। व्यायाम करने से हमारा शरीर हार्मोन डोपामाइन और सेरोटोनिन को मुक्त करता है, जिसमें हमें खुशी महसूस होती है। आजकल के दिनों में हमें दिल की बीमारी, मोटापा, मधुमेह, उच्च व निम्न रक्तचाप आदि बीमारियाँ हो रही हैं। नियमित रूप से व्यायाम करने से हम अपनी उम्र बढ़ा सकते हैं। हमारे जीवन का अंतिम 25% जिसे हम प्रार्थना एवं ध्यान द्वारा प्राप्त कर सकते हैं। यह हमारे जीवन को सार्थक बनाता है। परोपकार करके, दूसरों की निःस्वार्थ सेवा कर हम अपने जीवन में एक अद्भुत आत्मा का अनुभव करके शांति और समरसता महसूस करते हैं।

20/20/20 फॉर्मूला

सुबह 5 बजे उठकर और 20/20/20 फॉर्मूले का पालन करके हम अपने जीवन को ऊँचा उठा सकते हैं। हम में से कई लोग



अपने दिन की शुरूआत बहुत देर से करते हैं लेकिन अपने जीवन के मानकों को बढ़ाने के लिए हमें अपनी सुबह की दिनचर्या जल्दी शुरू करनी चाहिए। सुबह 5.00 बजे उठना और 20/20/20 फॉर्मूले का पालन करना यानि 20 मिनट के 3 सेट या अपनी सुबह का पहला घंटा यानि पवित्र घंटा। हमें 20 मिनट के इन तीनों सेटों में व्यायाम, प्रतिबिंबित और पढ़ना चाहिए। पहले 20 मिनट में हमें व्यायाम करना चाहिये। दूसरा 20 मिनट हमें प्रतिबिंबित करना चाहिए अर्थात जर्नल में लिखना चाहिए, अपने अल्पकालिक और दीर्घकालिक लक्ष्यों को निर्धारित करना चाहिए, उन्हें प्राप्त करने की योजना बनानी चाहिए, कार्य की सूची बनानी चाहिए। अंतिम 20 मिनट हमें या तो एक अच्छी किताब पढ़नी चाहिए या ऑडियो बुक सुननी चाहिए या ऐसे वीडियो देखने चाहिए जिनसे हम दिन की अन्य चीजों को करने के लिए प्रेरित हो सके और सीख सकें। याद रखें सुबह 5.00 बजे उठना है तो हमें रात्रि 10.00 बजे से पहले सो जाना चाहिए और यदि रात 10.00 बजे से पहले सोना है तो रात 8.00 बजे के पहले खाना बंद कर दें। यदि आवश्यक हो तो एक सूप लें और सोने से 2 घंटे पहले सभी उपकरणों को बंद कर दें क्योंकि मोबाइल, लैपटॉप और टेलीविजन जैसे उपकरण नीली रोशनी को दर्शाते हैं जो आपकी नींद में बाधा डालते हैं।



किसे कहूँ मुबारक

सूर्यमणि कुमार

डी.ई.ओ.

किसे कहूँ नया साल मुबारक, समझ नहीं आता,
उस बच्चे को, जो सोचता है आज कुछ खाने को मिल जाता,
या उसे जो आज भी होटल में किसी का जूठन है मांजता,
या उसे, जो महंगे होटल में नया साल मनाने है जाता,
किसे कहूँ नया साल मुबारक, समझ नहीं आता।

आज छोटू खुश है कि उसे मालिक से अपनी तनख्वाह के पैसे मिले हैं
मगर किसी को बता नहीं सकता महीने भर गाली कैसी मिली है
आज छुट्टी मिलती तो वो खुशी से अपने घर को जाता,
मगर अगले दिन ही बाप पैसे लेकर उसे वापस गाली कमाने छोड़ आता,
किसे कहूँ नया साल मुबारक, समझ नहीं आता।

आज हरिया का हाड़ कांप गया काम पर जाने में,
नया साल बीत गया उसको दो रोटी कमाने में,
मगर खुश है कि आज उसके घर भी चूल्हा जलेगा,
फिर सोचता है पैसा घटेगा तो नहीं मां की दवा लाने में,
किसे कहूँ नया साल मुबारक, समझ नहीं आता।





पूरी तरह समाऊंगी मैं



ज्योति जौहरी

पत्नी श्री अनुशील जौहरी

बहुत जी लिया है,
 अपने लिये,
 तेरे लिये जिऊंगी मैं।
 बहुत खोया है,
 बहुत खो दिया,
 बहुत खोकर अब,
 तुझे पाऊंगी मैं।
 तुम 'शील' हो, सरल हो,
 सरस बहती धारा हो,
 अब इस धारा में,
 खुद को बहाऊंगी मैं।
 नहीं चाहिये मुझे किनारा,
 नहीं चाहिये मुझे सहारा,
 अब बस तुझ में ही,
 पूरी तरह समाऊंगी मैं।
 क्या तू देगा मुझे,
 क्या मैं दूंगी तुझे,
 क्या रखा है इसमें,
 हो जायें हम एक धारा,
 एक रंग, एक संग, एक किनारा,
 एक परछाई, एक धूप, एक छांव,
 एक गीत, एक आवाज,
 एक ज्योति, एक मोती,
 हैं जैसे, वैसे तुझमें,
 मिल जाऊंगी मैं।



घर पे मेरे



दीक्षा चौहान

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

है समुन्दर भर लाने का बरतन कहाँ?
 अशक कम पड़ गये हैं घर पे मेरे।
 इस छोटी हकीकत के सपने बड़े,
 न मुड़ते कभी हैं घर को मेरे।
 और लोरी गरीबी की इतनी मृदु,
 कब से सोए इरादे हैं घर पे मेरे।
 उम्मीदें जो भीतर आ भी गईं,
 तो दम तोड़ देती हैं घर पे मेरे।
 खरोचें हजारों, लाखों घाव घने,
 जख्म सजते-संवरते हैं घर पे मेरे।
 पाहुन की लम्बी कतारें लगीं,
 व्यंग्य गुँजता है घर पे मेरे।
 फजीहत से टूटे अभिमान को,
 संजोये रखे हैं घर पे मेरे।
 कब से हुआ नहीं सूरज उदय,
 अब चाँद भी न आता घर पे मेरे।
 सिसकियों की गजल से है आंगन भरा,
 महफिलें गम की सजती हैं घर पे मेरे।
 कोई बोले न बोले ये जाहिर सा है,
 कोई जिंदा नहीं है घर पे मेरे।



पत्नी का प्रेम



भरत प्रताप सिंह सिकरवार

वरिष्ठ लेखापरीक्षक

“सुना अंकित, तेरी बीवी ने तुझे किडनी देने से मना कर दिया। इन्हीं कानों से सुना है मैंने, बाहर डॉक्टर को मना कर रही थी। पिछले 8 सालों से तुझे तो सिर्फ वही-वही दिखती थी, वही तेरी जिंदगी थी, बाकी हम सब तो तेरे दुश्मन थे, दुश्मन। आज तू जिंदगी और मौत से लड़ रहा है, उसे भी पता है कि तुझे किडनी नहीं मिली तो तेरी जान चली जायेगी। पर छोड़ दिया तुझे मरने को उस महारानी ने। और वो तेरा साला। सुबह से शाम हो गयी पर देखने भी नहीं आया तुझे। आज जो भी है वो तेरी वजह से ही तो है। इन दोनों का कोई फर्ज नहीं है क्या?”

घोर कलयुग है भगवान। मैं तो बूढ़ी हो गयी वरना....”

“माँ, निकिता ने..... ऐसा कहा, नहीं वो ऐसा नहीं कहेगी। आपने कुछ गलत समझा होगा।”

“भैया मैंने भी सुना। भाभी को यही बोलते हुए कि वो आपको किडनी नहीं दे सकती है, जबकि उनकी किडनी तो मैच भी हो गयी थी।”

इतने में निकिता और डॉक्टर आ जाते हैं।

“निकिता, तुमने तो मेरे साथ जीने-मरने के वादे किए थे और आज तुम मुझे 1 किडनी भी नहीं दे सकती, जबकि तुम्हारी किडनी मुझसे मैच भी हो गयी है। बोलो, क्या सच में तुम मुझे किडनी नहीं दोगी। हाँ या ना”

“हाँ पर...”

“अब मुझे कुछ नहीं सुनना। किसी ने सच ही कहा है कि समय आने पर ही सब रिश्तों का मोल पता चलता है। मैंने तुम्हारे लिए सब कुछ ठुकराया। वो सारा प्यार... सब धोखा था और तुम्हें अपने बच्चों पर भी दया नहीं आयी। अब जब तुम्हीं इतनी बेवफा निकली तो तुम्हारे भाई की क्या बात करें। कम से कम मिलने तो आ जाता। वाह री दुनिया...।”

“माफ कीजिये, ये आपका पारिवारिक मामला है डॉक्टर होने के नाते मुझे नहीं बोलना चाहिए, परन्तु आपकी पत्नी इसलिए किडनी नहीं दे रही हैं क्योंकि यदि वे किडनी दे देंगी तो खुद जिन्दा नहीं बचेगी।”

यह सुन सब स्तब्ध थे।

“मतलब?” अंकित ने पूछा।

“मतलब मैं बताता हूँ। जीजाजी... डॉक्टर साहब सही कह रहे हैं। सबसे पहले तो माफी, शहर से बाहर होने के कारण सुबह से नहीं आ पाया। आज से 10 साल पहले पापा की किडनी खराब होने के कारण दीदी ने अपनी 1 किडनी पापा को दे दी थी उस समय मैं छोटा था, तो नहीं दे पाया था। यदि अब वो 1 किडनी भी आप... पर आप चिंता मत कीजिये। मेरी किडनी मैच हो गयी है और मैं आपको 1 किडनी दे रहा हूँ। 10 साल पहले जो मेरा फर्ज था वो दीदी ने पूरा किया था, इसलिए आज जो दीदी का फर्ज है वो मैं पूरा कर रहा हूँ।”

निकिता रोते हुए चली जाती है। कब तक अपने हर फर्ज को मुझे अग्नि परीक्षा देकर ही साबित करना होगा। सीता ने तो केवल एक बार अग्नि-परीक्षा दी थी, लेकिन आज की नारी पल-पल अग्नि-परीक्षा देती है, फिर भी मुस्कुराते हुए अपना फर्ज पूरा करती रहती है।





मानव हूँ, मानव पर कविता लिखती हूँ

अर्चना मानव

आशुलिपिक

चल पड़ा मानव खुशियों की खोज में,
सारी उलझनें दूर करने की सोच में,

कहां आंसुओं की ये सौगात होगी,
नए लोग होंगे, नई बात होगी,

नई उम्मीदों का सवेरा था,
नई तरंगों का बसेरा था,

मानव हूँ, मानव पर कविता लिखती हूँ,
ताकि मानवता का अलख जगा सकूँ।

गलती कर बैठा मानव सफलता पाने की होड़ में,
पाप कर बैठा मानव पुण्य कमाने की होड़ में,

न मां की सेवा की, न ही समाज की,
अपने ही पतन की उसने आगाज की

मुझमें सर्वस्व प्रवीणता है, इस अहंकार में,
कह बैठा मैं चिराग हूँ अपने परिवार में,

मानव हूँ, मानव पर कविता लिखती हूँ,
ताकि मानवता का अलख जगा सकूँ।

बना बैठा है अपने को ही इंसान से भगवान,
बस भरा हुआ है अभिमान ही अभिमान,

मिट रही इंसानियत देखो, हर तरफ श्मशान है,
इंसान से भगवान बनना इतना भी न आसान है,

इंसान भुला बैठा है इंसानियत के तौर-तरीके,
दूसरों के दुःख-दर्द कम करने के तरीके,

मानव हूँ, मानव पर कविता लिखती हूँ,
ताकि मानवता का अलख जगा सकूँ।

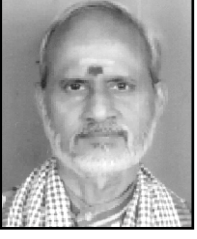
दुआ कहां से कमा पाओगे,
पाप का घड़ा पहले ही भरा पाओगे,

वक्त की ठोकर ऐसी लगेगी, सारे सपने बिखर जाएंगे,
जहां दवा काम ना आएगी, वहां दुआएं काम आ जाएंगी,

सदाचार, सज्जनता और सचरित्रता अपनाना है,
हर किसी के दिल में मानवता को बढ़ाना है,

मानव हूँ, मानव पर कविता लिखती हूँ,
ताकि मानवता का अलख जगा सकूँ।





जो उत्कृष्ट नहीं है, ईश्वर तक नहीं पहुंच सकता

श्रीकृष्ण बाथम

एम.टी.एस.

‘श्रद्धा रहित ज्ञान व्यर्थ है, ज्ञान के बिना उत्कृष्टता नहीं आती, जो उत्कृष्ट नहीं है, ईश्वर तक नहीं पहुंच सकता’

ऐसा विद्वानों का कथन है जिसे झुठलाया नहीं जा सकता। भारतीय दर्शन को उदारवादी प्रकृति ने उनके चिन्तनों के परिप्रेक्ष्य में आस्तिक और नास्तिक दो श्रेणियों में विभाजित किया है। सामान्य चिन्तन यह स्वीकार करता है कि आस्तिक का अर्थ ईश्वर की सत्ता में विश्वास करने वाले से और नास्तिक का अर्थ उसे नकारने वालों से है, जबकि भारतीय दार्शनिक बोध इस दृष्टि से यह विभाजन नहीं करता। भारतीय दर्शन के अनुसार कर्मफल इसके केंद्र में है। महर्षि पतंजलि ने योग सूत्र में ईश्वर को एक कर्माशय से मुक्त विशेष पुरुष के रूप में परिभाषित किया है यथा- ‘क्लेशकर्म विपाकाशयैरथराभष्टाः पुरुष विशेष ईश्वरः।’ मात्र चार्वाक नास्तिक दर्शनों पर अपनी गणना कराता है ईश्वर के विश्वास को न मानने वाले भी आस्तिकता का अंश माने गये हैं। महर्षि पतंजलि द्वारा योग दर्शन में और अधिक स्पष्ट किया गया है ‘तदादृष्टु, स्वरूप अवस्थानम्’ अर्थात् उसका दर्शन होने पर जीवात्मा अपने मूल स्वरूप में स्थित हो जाती है। भारतीय दर्शन का उद्गम, विस्तार एवं प्रभाव अत्यन्त विशाल एवं व्यापक है। ईश्वर अनेक रूपों में अवतरित हुए हैं। ये अवतार क्यों हुए इस पर संत शिरोमणि गोस्वामी तुलसीदास जी ने श्रीरामचरितमानस में वर्णित किया है - यथा

‘जब जब होई धरम कै हानी। बाढ़हि असुर-अधम अभिमानी।।

करहिं अनीति जाइ नहि वरनी। सीदहिं विप्र, धेनु, सुर धरनी।।

तब तब प्रभुधरिविविध सरीरा। हरिहिं कृपा निधि सज्जन पीरा।।’

लोक मंगल और लोक कल्याण हेतु ही ईश्वर अवतरित होकर नर-लीलायें करते हैं ताकि सामाजिकता की भावना में मर्यादित आदर्शों का भलीभांति पालन हो सके। वर्तमान में यह आवश्यक हो गया है कि बौद्धिक संपदा का पीढ़ी-दर-पीढ़ी संरक्षण और संवर्धन हो। ज्ञान ही प्रगति की आधार-शिला है, ज्ञान रहित मनुष्य अन्य पशुओं की तरह ही आदिम-अनपढ़-अपरिष्कृत प्रवृत्तियों, आवेगों से परिचालित जीवन जीता है, और मानवीय गरिमा का अर्थ तक नहीं समझ पाता। स्वर्ग और नरक किसी अज्ञात क्षितिज पर बसी बस्तियां नहीं हैं उन का निवास मनुष्य के विचारों में ही होता है। सद्विचार स्वर्ग और असद्विचार नरक का रूप धारण कर लिया करते हैं। आप को ऐसा दीपक जलाना चाहिए जो अन्दर और बाहर दोनों तरफ उजाला करता हो। जैसा कि गोस्वामी तुलसीदास जी ने मानस में लिखा है कि ‘रामनाम मनि दीप धरि, जो देहरी द्वार। तुलसी भीतर-बाहरो जो चाहस उजियार।।’ जिस प्रकार से भगवान ने जगत हित-लोक मंगल की भावनाओं के साथ कार्य किया है ठीक उसी प्रकार की भावनाएं सभी मानवों को अपने जीवन में उतारनी ही चाहिए। ताकि विसंगतियों को दूर कर सुखी रहा जा सके, शांति की खोज में इधर-उधर भटकना न पड़े। प्रश्न यह भी कौंधता है कि जिसमें आत्मविश्वास नहीं है, उसमें अन्य चीजों के प्रति विश्वास कैसे उत्पन्न हो सकता है। ऐसा उत्सर्ग आप प्रस्तुत करें कि अपनी सारी क्षमतायें लोकमंगल के लिये अर्पित कर देना ही जीवन की वास्तविकता को दर्शाए। वृक्ष, नदी, बादल, पर्वत, समुद्र आदि हमें यथार्थ और सत्यमयी जीवन की शिक्षा यानि हमें सिद्धांतों के लिए त्याग करना जरूरी है। आत्मबल ईश्वरीय सत्ता का पर्याय ही है। शब्द ब्रह्म है, अनहद नाद का सूचक है। इतना ही नहीं उसमें ईश्वरीय शक्तियां बीज रूप में निहित हैं, जिन्हें कोई भी झुठला नहीं सकता। आत्मबल के धनी ही इस जीवन में स्वर्ग मुक्ति का परमानंद प्राप्त करते हैं और जीवन के लक्ष्य को समय पर प्राप्त कर लेते हैं। ऋग्वेद में भगवान का



संदेश निहित है यथा - 'न व उमां बृजने वारयन्ते, न पर्वतायो यदहं मनस्ये। मम स्वनाकृधु कर्णोभयात्, एवेदनु द्यून्किरण-समेजात्।।' वर्तमान में समाज के अन्तर्गत विकृतियों ने अपना डेरा जमा रखा है। भौतिकवादी क्रांति के कारण ही नर-पशु से भी पतित होकर साक्षात् असुरों का आचरण कर रहे हैं। वे नाना प्रकार के पाप कर दुष्प्रवृत्तियों को अपनाकर इस लोक में पतित हो रहे हैं तो दूसरी ओर परलोक को भी बिगाड़ रहे हैं। जैसा कि संत शिरोमणि गोस्वामी तुलसीदास जी ने महाकाव्य श्री रामचरितमानस में वर्णित किया है। 'करहिं मोह बस नर अथ नाना। स्वारश रत परलोक नसाना।' आगे देखिये - 'पर द्रोही परदार रत, पर धन पर अपवाद। ते नर पावर पापमय, देह धरें मनुजाद।।' विभिन्न धर्मों के अनुयाइयों ने पृथक-पृथक मार्ग अपनाये हैं, किंतु वे सभी मार्ग ईश्वर की ओर ही केन्द्रित हैं, उन्मुख हैं। ईश्वरीय सत्ता से बचकर कोई निकल नहीं सकता सभी प्राणी उस सत्तामयी ईश्वर के ही अधीन हैं। जैसा कि संत शिरोमणि तुलसीदास जी ने लिखा है 'ईश्वर अंश जीव अविनासी, चेतन अमलसहज सुखरासी।' ईश्वर की प्रदाय शक्ति की विशेषता भी अनोखी है जिसको जो भी जरूरत है वह उसे प्रदाय करने में कभी भी समय नहीं गंवाता। द्रौपदी की लज्जा सुरक्षित करने के लिए भगवान श्रीकृष्ण ने चीर बढ़ाई थी, बल्कि कई कार्यों की संपन्नता के लिए ईश्वर ने कोई न कोई रूप रखकर नंगे पांव दौड़ लगाई थी - 'जितने गोपी उतने श्याम, की लीला तो निराली ही थी, कौन किस को देता है कौन किस से लेता है 'देनहार कोई और है भेजत है दिन-रैन। लोग भ्रम हम पर करें, तासों नीचे नैन।'





आत्ममंथन

अर्चना मानव

आशुलिपिक

कुछ दिन पहले की बात है। कुछ काम न होने के कारण मैं अपने मोबाइल में फेसबुक चला रही थी। तभी मेरी नजर एक फिल्म के वीडियो पर पड़ी। जिसके बारे में लिखा हुआ था कि साउथ की इस मूवी ने पूरे फिल्म इंडस्ट्री में तहलका मचा दिया। मैंने उस मूवी को एक मिनट के लिए देखा, पर मुझे उस मूवी में वैसा कुछ लगा नहीं। फिर मैंने सोचा आखिर इस मूवी में ऐसा क्या है जो फिल्म के बारे में ऐसा लिखा गया। वैसे मेरी आदत है कि किसी भी मूवी को देखने से पहले मैं उसका रिव्यू देखती हूँ, सो मैंने उसका रिव्यू पढ़ना शुरू किया। कमेंट्स में सभी ने लिखा था नाइस मूवी, शानदार मूवी, दमदार मूवी, वगैरह-वगैरह। मैंने सोचा कि आखिर है क्या इस मूवी में साधारणतः हरेक मूवी के रिव्यू को मैं जब पढ़ती हूँ तब उसमें एक न एक आलोचक होते ही हैं। पर इस मूवी में ऐसा क्या है जो हर किसी ने प्रशंसा ही की है। रिव्यू पढ़ने के दौरान ही मुझे उस फिल्म का नाम भी पता चला, बस क्या था, कुछ काम था नहीं, मैंने यूट्यूब पर जाकर उस मूवी को डाउनलोड कर लिया। खा-पीकर मैं उस मूवी को देखने बैठ गई। शुरुआत में तो मुझे उस मूवी में वैसा कुछ नहीं लगा, किंतु जब अंत का मैंने कुछ अंश देखा तो मैं भी स्तब्ध हो गई कि वाकई इस मूवी में तो जान है, तहलका मचाने वाली बात है। कुछ आगे लिखने से पहले मैं इस मूवी में नायक के द्वारा बोले गए डायलॉग को बताना चाहूंगी।

‘2 अक्टूबर, रिपब्लिक डे के दिन भी सिर्फ छुट्टी मनाने के दिन रह गए हैं, वाट्सएप, फेसबुक, ट्वीटर जैसे सोशल साइट्स पर मैसेज भेजकर उस दिन को सेलीब्रेट करने में लग जाते हैं। नहीं, आगे से ऐसा मत करो, देश के लिए कम से कम एक ऐसा दिन निकालो जिसे क्वेशचनिंग डे का नाम दो और जिस दिन ऐसा हो जाएगा उस दिन हम मीडिया से, नेताओं, सिस्टम से सवाल पूछेंगे, उस दिन ये देश मजबूत होगा, हम सब मजबूत होंगे। अरे, कब तक बेचते रहोगे धर्म के लिए, पद के लिए, साड़ी के लिए, पॉलिसी के लिए, नोट के लिए, बीयर और बिरयानी के लिए अपने कीमती वोट को, ये सब बंद करो। इस बार वोट देने से पहले इस देश के झंडे को जरूर याद कर लेना, अपने बच्चों के भविष्य और इस देश के भविष्य को जरूर याद कर लेना तभी ये वोट एक सही पार्टी को जाएगा और सच्चे और ईमानदार नेता आएंगे। हमारी जिंदगियां बदलेंगी और यह देश तेजी से तरक्की करेगा, सारे संसार में मेरा भारत महान कहलाएगा। एक बात और सुन लो, वोट तुम्हारा हक है, अगर इसे जिम्मेदारी से नहीं डाला, तो भारत देश में ही नहीं, इस धरती पर जीने का कोई हक नहीं।’

ये तो मेरे द्वारा लिखे गए मात्र शब्द हैं पर जब नायक के द्वारा इस बात को बोला जाता है तो वास्तव में यह महसूस होता है कि वाकई ऐसी गलतियां हम कर जाते हैं। मेरी भी जब उम्र 18 वर्ष हुई थी। मैं भी काफी खुश थी कि मैं अब वोट दे सकती हूँ। मैं अपने अभी तक के जीवन में दो बार वोट देने गई हूँ। मुझे राजनीति और राजनीतिक पार्टियों में ज्यादा दिलचस्पी नहीं है, इस कारण से वोट किसे देना है, कौन मेरे कीमती वोट का सही हकदार है, मेरे एक कीमती वोट की क्या कीमत है, मैं इन सब बातों पर ध्यान नहीं देती थी। बस, वोट देकर आती थी, चेहरे पर प्रसन्नता होती थी कि मैंने वोट दिया है और आजकल का ऐसा ट्रेंड बना हुआ है लोग वोट देने के बाद अपनी फोटो को फेसबुक, वाट्सएप, इंस्टाग्राम और कई सारे सोशल साइट्स पर अपलोड कर देते हैं, फिर लाइक्स, कमेंट्स का इंतजार करते रहते हैं। सो मैंने भी वही गलती की, मैंने भी प्राउड टू बी वोटर लिखकर अपनी उंगलियों के निशान को दिखाते हुए फोटो अपलोड कर दी।

फिर अपनी दिनचर्या में मस्त हो गई। कौन जीतेगा-कौन हारेगा मुझे इससे कोई मतलब नहीं था क्योंकि मुझे सारे नेता एक जैसे ही लगते हैं, कुर्सी मिल जाने के बाद सभी जनता से किए अपने वादे भूल जाते हैं।

परंतु, इस फिल्म को देखने के बाद मैं भी सोच में पड़ गई। क्या एक नागरिक होने का सिर्फ इतना ही कर्तव्य है कि वोट देना है, चाहे वो कोई भी हो। क्या हम अपनी कीमती चीजें किसी को भी बिना जांच-पड़ताल के सुनी-सुनाई बातों पर विश्वास करके, बिना सोचे-समझे किसी को भी दे देते हैं। अगर ये सवाल मैं आपसे भी पूछूं तो आपका भी जवाब नहीं ही होगा। तो फिर हम अपना कीमती वोट ऐसे ही व्यर्थ क्यों करे। लोग जब अपना घर बनाते हैं तब तो वहीं खड़े होकर हर चीज की निगरानी करते हैं कि सीमेंट, बालू कितनी मात्रा में मिलाया जा रहा है। परंतु, यही बात जब देश के लिए आती है तो कोई ध्यान नहीं देता कि ठेकेदार नोट के लालच में आकर, पैसे बचाने के चक्कर में, टेंडर अधिक पास करवाने के लिए, राजनीतिक पार्टियों के दबाव में आकर वे सड़क, पुल बनाने में मात्रा में अंतर कर देते हैं। परंतु उस समय कोई इसकी निगरानी नहीं करता, लोगों को हो रहे घोटालों से कोई मतलब नहीं होता कि आगे क्या होने वाला है। जब वही सड़क, पुल टूट-टूटकर गिरते हैं तो लोग ठेकेदारों की, नेताओं की बुराई करते नहीं थकते। लेकिन, सवाल यह है कि क्या हमने अपने आप से कभी यह सवाल किया कि हमने जिम्मेदार नागरिक होने का कर्तव्य निभाया? क्या जब हमारी आंखों के सामने गलत हो रहा था तब हमने उसका विरोध किया? नहीं, क्योंकि हम डरते हैं कि जब विरोध करेंगे तो शायद हमारे साथ कुछ गलत हो जाएगा, तो फिर अब उनकी बुराई क्यों। मुझे इस बात पर एक प्रसिद्ध दोहा याद आ गया -

**बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय,
जो दिल खोजा आपना, मुझसे बुरा न कोय।**

हर एक नागरिक अपनी नागरिकता को समझदारीपूर्वक निभाएं तो हमें दूसरों की बुराई करने का मौका ही नहीं मिलेगा। दूसरे हमारे साथ बुरा करें हम वैसा मौका ही दूसरों को क्यों दें। गलती हमने की, जब हमारे पास मौका था सही नेता चुनने का तब हमने अपनी शक्ति को नहीं पहचाना और अब मन ही मन सारे नेताओं को कोसते हैं। ये हो सकता है कि हर घर में गांधी, सुभाष, भगत सिंह पैदा होना मुमकिन नहीं है, कि सरकार से टक्कर ले पाएं। परंतु, आज हमारे पास, हमारी उंगलियों में वो ताकत है जो एक दिन में किसी को भी अर्श से फर्श पर ला सकती है। भारत में लोकतांत्रिक प्रणाली है, जहां हर व्यक्ति को अपनी सरकार चुनने का हक है, वो भी गोपनीय तरीके से। जब हम अपना कीमती वोट देने से पहले एक बार भी जांच-पड़ताल नहीं करते। लोग सिर्फ अखबारों को पढ़कर, न्यूज चैनलों में दिखाए जा रहे समाचारों को सुनकर, आस-पास के लोगों की बातों को सुनकर बिना जांच-पड़ताल किए ही वोट दे देते हैं। क्या हमने कभी ये जानने की कोशिश की कि जो चुनाव में उम्मीदवार खड़ा हो रहा है, उसका बैकग्राउंड कैसा है? क्या उसमें मानवता है? क्या उसने समाज की भलाई का कार्य किया है? क्या उसमें गरीबों के प्रति आदर-सम्मान है? और भी न जाने ऐसी कई बातें जिसके बारे में हम सोचते तक नहीं, बस वोट दे देते हैं। क्योंकि आज के दौर में ऐसा बहुत देखने को मिल जाता है कि लोग अपनी पार्टी जिताने के लिए न्यूज चैनलों, अखबारों को, कुछ लोगों को पैसे देकर खरीद लेते हैं। मैं अब की बात तो नहीं कह सकती, क्योंकि अब मेरा उतना अपने गृह नगर पर रहना नहीं हो पाता, पर जब मैं छोटी थी तब ऐसा बहुत सुनने को मिलता था कि उस पार्टी ने लोगों को हजार-हजार का नोट देकर वोट देने की बात कही। और भोली-भाली जनता नोट के लालच में आकर बिना सोचे समझे वोट दे देती थी। जिसका खामियाजा हमें सिर्फ 05 सालों तक ही नहीं, बल्कि लंबे समय तक भुगतना पड़ता था। आज भी मैं कई युवाओं को बोलते हुए सुनती हूँ, कि इस नेता के शासन में नौकरियों के लिए रिक्तियाँ नहीं आती, इसने युवाओं को बेरोजगार कर दिया, क्या इन्हीं युवाओं ने वोट देने से पहले विचार किया कि वे जिस नेता को वोट देने जा रहे हैं उसका राजनीतिक करियर कैसा है, बस सुनी-सुनाई बातों पर वोट दे देते हैं। तो फिर अब कोसने से क्या फायदा? अब पछताय होत क्या जब चिड़ियां चुग गई खेत।



मेरा ये लिखने का उद्देश्य मात्र इतना है कि मैंने जो गलतियाँ वोट देने में की और मैंने उससे जो सीख प्राप्त की, शायद उसे पढ़कर कोई एक भी वोट देने से पहले उम्मीदवारों के बारे में जांच-पड़ताल कर ले कि जिसे हम अपना नेता चुन रहे हैं वो जनता की सेवा करने के योग्य है या नहीं, तो मेरा यह लेख लिखना सार्थक हो जाएगा।

अंत में मैं यही लिखना चाहूंगी -

वोट देना सिर्फ अधिकार नहीं है हमारा, समझदारी पूर्वक देना कर्तव्य है हमारा।

अपनी उंगली की ताकत को पहचानो, भविष्य निर्माता स्वयं हो, बात ये मानो।।

अधूरे ख़्वाब हों पूरे

अल्का जैन, 'शरर'

अतिथि रचनाकार

अधूरे ख़्वाब पूरे हों ये दिल में ग़म नहीं रखती।
पुराने ज़ख़्म पर अपने नया मरहम नहीं रखती।।

नहीं है मुख़्तसर दुनिया न हूँ लक्ष्मण की रेखा में,
ज़मीं से आसमां तक मैं उड़ाने कम नहीं रखती।

सजा कर ख़्वाब तेरा इक दफ़ा आँखों में रखवा था,
पलक की पंखुड़ी को मैं तभी से नम नहीं रखती।

सतह पर आ गया है वो मगर ये कह नहीं पाई,
मैं उसके इश्क़ की गहराई दिल में कम नहीं रखती।

अभी बस इतना उतरा है मेरा दिलदार नजरो से,
मैं उसकी फ़िक्र रखती हूँ मगर हरदम नहीं रखती।

हो सावन चाहे पतझड़ हो सभी का ख़ैर मक़दम है,
मैं शहर-ए-दिल में अपने एक सा मौसम नहीं रखती।



तुलसी प्रदूषण से बचाये

श्रीमती सारिका शर्मा

पर्यवेक्षक

औद्योगिकीकरण के परिणाम स्वरूप प्राकृतिक संतुलन बिगड़ता जा रहा है। आज न शुद्ध वायु है न शुद्ध जल न शांत वातावरण। शहरीकरण में कई पेड़ों को नष्ट कर दिया जाता है।

पेड़-पौधे, पर्यावरण और धरती की संपदा है। आधुनिकीकरण और शहरीकरण की प्रक्रिया में इनको नष्ट करने से पर्यावरण का संतुलन बिगड़ रहा है। हरे पेड़-पौधे कार्बनडाइऑक्साइड गैस ग्रहण करते हैं और ऑक्सीजन प्रदान करते हैं। शहरों में हरियाली कम होने से वायु प्रदूषण काफी बढ़ गया है। शहरों में हर घर में कुछ पेड़-पौधे लगाकर प्रदूषण से जंग लड़ी जा सकती है। तुलसी अपने आसपास का वातावरण वायु प्रदूषण से बचाती है। पुराने समय में हिन्दुस्तान के हर घर-आंगन में तुलसी का बिरवा अवश्य होता था। पूजा-अर्चना में भी इसे महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। तुलसी के बिना पूजा अधूरी है। इसलिए हर घर में तुलसी का पौधा जरूर होना चाहिए। साधारण समझी जाने वाली यह वनस्पति अनन्तकाल से हमारी श्रद्धा की केंद्र रही है। सत्यनारायण की पूजा-प्रसाद में भी तुलसी दल का महत्वपूर्ण स्थान है। साधारण जल भी तुलसी मिला देने से चरणामृत बन जाता है। तुलसी भगवान विष्णु को अतिप्रिय है, इसलिए इसका एक नाम विष्णुप्रिया भी है। प्रकृति के इस अनमोल उपहार में असीम रोग संहारक क्षमता है। यदि इसका नियमित सेवन किया जाए तो व्यक्ति निरोगी रहता है। तुलसी वस्तुतः दो प्रकार की होती है, राम और श्याम। मान्यता है श्याम तुलसी के गुण कुछ अधिक हैं, किंतु आयुर्वेद की दृष्टि से दोनों ही गुणकारी हैं।

शुक्ला कृष्णा च तुलसी गुणैस्तुल्या प्रकीर्तितः

तुलसी को विभिन्न भाषाओं में अलग-अलग नाम से जाना जाता है। हिंदी, संस्कृत, गुजराती और बांग्ला में यह तुलसी नाम से विख्यात है। मराठी में तुलस, तेलुगु में गाप्पासचेट्ट, तमिल में तुलसी, कन्नड में एरेड तुलसी, अंग्रेजी में होलीबेसिल (Holy Basil) और देव भाषा संस्कृत में इसके कई नाम हैं।

तुलसी सुरसा ग्राम्या सुलमा बहुमंजरी।

अयेत राक्षसी, गौरी भूतहनी देवदुन्दुभिः॥

भारत के प्रत्येक भाग में यह पौधा सुलभ है। इसके पौधे एक से ढाई फीट तक ऊंचे होते हैं। पत्ते लगभग एक इंच के कुछ अण्डाकार और सुगन्धयुक्त होते हैं। फूल एक मंजरी में होते हैं। इसके बीज चपटे और ललाई लिये होते हैं। तुलसी के पत्ते, डंठल और बीज सभी गुणकारी हैं। इसके पत्तों में एक विशिष्ट तेल होता है, जो कीटाणुयुक्त वायु को शुद्ध करता है। इसके पत्तों के सेवन से शरीर में बल और ओज की वृद्धि होती है। प्रातःकाल खाली पेट तुलसी रस और पानी लेने से बल और स्मरणशक्ति में वृद्धि होती है।

तुलसी में एक विशिष्ट क्षार होता है, जिसके मुंह से दुर्गंध आती हो, यदि वह थोड़े-बहुत तुलसी के पत्तों का नित्य सेवन करें तो उसके मुख की दुर्गंध दूर हो जाती है। खाने के बाद कुछ तुलसी के पत्ते चबा लेने से स्वास्थ्य अच्छा रहता है। तुलसी बहुपयोगी है। शहरीकरण के दौर में हर घर में तुलसी लगाकर पर्यावरण के साथ-साथ स्वास्थ्य लाभ पा सकते हैं।



महासती तुलसी वृंदा

जिन वनस्पतियों से समाज के रुग्ण मानवों का ज्यादा से ज्यादा फायदा हो सकता है, उसको आयुर्वेद ने प्रतिष्ठित करने के लिए पूजनीय स्थान दे दिया है। ऐसी वनस्पतियों के साथ किसी न किसी को प्रतीक मानकर मान्यता प्रदान की गई है, ताकि आयुर्विज्ञान से अनजान साधारण आदमी भी उस वनस्पति के लाभ से वंचित न रह जाए। श्रीमद्भागवत में जालंधर नाम के एक प्रतापी राक्षस की कहानी आती है। तुलसी वृंदा उसकी पत्नी थी। कथा में बताया गया कि जालंधर जितना दुराचारी था, उसकी पत्नी उतनी ही सदाचारी और भगवान विष्णु की उपासिका थी, जब जालंधर और भगवान शिव का युद्ध हुआ, तो उसे मारना शिव शक्ति के परे था, क्योंकि तुलसी वृंदा एक सदाचारिणी, पतिव्रता, विष्णुपारायण स्त्री थी, लेकिन जालंधर के पापों का घड़ा भर गया और वह मारा गया। तब भगवान विष्णु ने महासती तुलसी वृंदा को वरदान दिया कि तुम हर घर में पूजी जाओगी, हर आंगन में तुमको स्थान मिलेगा और किसी भी पूजा के प्रसाद को तब तक प्रसाद नहीं माना जाएगा, जब तक तुम्हारे दल (पत्ते) उसमें नहीं मिलाये जाएंगे।

तब से यानि वैदिक काल से तुलसी का बिरवा सद्गृहस्थों के आंगन में रहकर परिवार को सूक्ष्म संक्रामक जीवाणुओं से बचाता आ रहा है। वायु को प्रदूषित होने से बचाने के अलावा तुलसी का पंचांग (जड़, शाखाएं, फूल, पत्तियां और मंजरी) औषधीय गुण से परिपूर्ण हैं।





मानवीय परिवर्तन - एक कटाक्ष



अभिषेक त्रिपाठी

डाटा एंट्री ऑपरेटर

परिवर्तन ही संसार का नियम है। परिवर्तन अनिवार्य है, परन्तु आज के परिवेश में अगर हम देखें तो संसार में मानवों द्वारा अधिरोपित 'परिवर्तन' बहुत सराहनीय सा नहीं दिखता है। आज संसार में जो परिवर्तन हो चुका है उसके नुकसान की भरपाई सम्भवतः मनुष्य भविष्य में नहीं कर सकता, चाहे वो प्राकृतिक हस्तक्षेप हो, सांस्कारिक विकृति हो या सामाजिक अतिक्रमण हो, हर क्षेत्र में परिवर्तन विनाशकारी सा प्रतीत होता दिख रहा है।

आज मनुष्य इंटरनेट के माध्यम से 'सोशल वेबसाइट्स' पर इतना खो गया है कि सामाजिक बनने की चाह में असामाजिक हो गया है। इन वेबसाइट्स का आविष्कार मानवों को जोड़ने हेतु हुआ था, परन्तु आज के युवा को सबसे ज्यादा असामाजिक और बिगाड़ने वाला कारक सिद्ध होता दिख रहा है। अब ऐसा लगता है दूर की चीजें भले ही थोड़ा पास हो गयी हों, परन्तु पास की चीजें अब दूरी बनाने लगी हैं। यही तो है आधुनिक तकनीक का कमाल, सचमुच अब तो मनुष्य बहुत व्यस्त हो गया है।

नब्बे के दशक में अगर हम देखें तो ऐसा समय होता था जब रविवार के दिन का इंतजार होता था, सबरे सात बजे 'रंगोली' कार्यक्रम से दिन की शुरुआत होती थी फिर सुबह नौ बजे 'श्रीकृष्ण' देखने मानो भीड़ उमड़ पड़ती थी। उसके बाद बच्चों के लिए मनमोहक व ज्ञानवर्धक कार्टून व अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रम टेलीविजन पर प्रदर्शित होते थे। इन कार्यक्रमों में इतना रस, आनंद और उत्साह था कि संसार की कोई भी खुशी इसके समान दिखाई नहीं देती थी, क्योंकि इसमें परिवार एक साथ एकत्रित होकर चाहे बच्चे, बूढ़े, युवा या अन्य मित्र व परिवारगण हो, सब साथ में बैठकर इस निर्मल आनंद का लाभ लेते थे। ऐसे ही शुक्रवार के दिन शाम सात बजे चित्रहार का इंतजार रहता था, घर में अगर कोई काम करने वाला हो तो वह छह बजे के बाद परिवार के साथ ही समय बिताता था, न कि आज की पीढ़ी की तरह, जो अपना समय व्हाट्सएप और फेसबुक पर व्यस्त रहकर अपनी उपयोगिता कहीं और सिद्ध करने में व्यतीत करता है। पहले सभी परिवार के सदस्य एक-दूसरे से सामंजस्य बनाए रहते थे एवं पारिवारिक सुख भोगते थे। हाँ, इतना तो था कि संतोष में जीवन व्यतीत कर रहे थे, बड़ी भाग-दौड़ की जिंदगी नहीं थी और सभी एक-दूसरे के सुख-दुख में परस्पर साथ देते थे और परिवार सुखपूर्वक एवं शांतिपूर्वक रहता था। गर्मी की छुट्टियों में गांव में घूमने का आनंद ही कुछ और था, गांव के लोगों से वार्तालाप करना, सब्जियाँ कैसे उगाई जाती हैं, फसल कैसे उगाई जाती है एवं गांव की संस्कृति को समझना, चूल्हे पर सेकी हुई रोटियां खाना और फिर रात के सन्नाटे में दादा-दादी की कहानियां सुनना, इसमें भी एक अलग आनंद था। जीवन के ये पल फिर कभी नहीं आएंगे और इसमें एक अलग सा ही संतोष था। जितनी सुख सुविधाएं आज हैं, इन के न होते हुए भी हमें अपने जीवन के ये पल किसी कृत्रिम 'मेमोरी' या किसी फोटो में सुरक्षित रखने की आवश्यकता नहीं थी।

आज का युग दिखावटी युग है। हर चीज में दिखावटीपन है, चाहे वह शादी की परंपरा हो, चाहे वह किसी का जन्मदिन हो या फिर कोई जीवन का महत्वपूर्ण क्षण, हर जगह दिखावट है। आनंद लेने में भी दिखावटीपन है और उनके नए-नए नामकरण हो चुके हैं। हंसी तो तब आती है जब भारतीय संस्कृति में कोई ये कहे कि परिवार के साथ समय बिताना एक 'क्वालिटी टाइम' है। हाय रे संसार, ये हम कौन से गर्त में आ गिरे हैं। आज राजेश खन्ना की फिल्म 'बावर्ची' का वो संवाद याद आता है, जिसमें वे कहते हैं, 'आज हम बड़ी खुशी



पाने के चक्कर में अपनी दैनिक छोटी-छोटी खुशियों को महसूस नहीं कर पा रहे हैं।’

आज का मानव बस मोबाइल और इंटरनेट की दुनिया में व्यस्त है, यह मनुष्य की जरूरत थी, परंतु, अब ऐसा लग रहा है कि यह मनुष्य पर हावी होती चली जा रही है। नई-नई बीमारियों ने जन्म लेना शुरू कर दिया है, कम उम्र में ही लोग बड़ी-बड़ी बीमारियों के शिकार होते चले जा रहे हैं। पैदल चलना तो लोगों ने बंद ही कर दिया है और साइकिल चलाना तो जैसे दूर की बात है। आज का मानव न ही परिवार के प्रति सचेत है और न ही वातावरण के प्रति। एक दिखावटपन में ही हम अपनी जिंदगी व्यतीत किये जा रहे हैं जिसमें कोई लाभ नहीं है, क्योंकि जो मिथ्या है उसमें कोई वास्तविक सुख प्राप्त नहीं होता है, ये बस एक क्षणिक आनंद मात्र है। आज हम परिवार के लिए समय नहीं दे पा रहे हैं, खाना खाने से किनारे हो रहे हैं, बड़े-बड़े रेस्टोरेंट्स और ऑनलाइन कंपनियों से खाना मंगवा रहे हैं। परिवार के साथ भोजन करने का जो सुख होता था वह भी अब जाता सा दिख रहा है। इंसान अपने आप को भागती हुई जिंदगी में डालता चला जा रहा है। टेलीफोन का जब अविष्कार हुआ तब यह दूरसंचार के माध्यम से लोगों को एक-दूसरे से जोड़ने के लिए पैदा हुआ था। आज उसमें भी वृद्धि करके इंटरनेट के माध्यम से लोग वीडियो/ऑडियो के माध्यम से दूसरे से जुड़े हुए हैं और इसमें कोई बुराई भी नहीं है, लेकिन एक समय जो पत्र लिखकर, सादर चरण स्पर्श से संबोधन करके और सबका हालचाल जानने का जो निर्मल आनंद, एहसास और आशीर्वाद मिलता था, वह आजकल कैसे मिल सकता है। क्योंकि, आजकल के संसार में मनुष्य फोन पर तो ऐसा लगा हुआ है मानो तालाब का जोक किसी का पैर पकड़े हुए हो। ऐसे में जो भाव है, जो संस्कार है, जो स्नेह है वह प्रकट नहीं हो पा रहा है और विलुप्त होता दिख रहा है।

जो संस्कार हमारे पूर्वजों ने हमारे मां-बाप को दिए और जो हमारे मां-बाप ने हम को दिए, क्या वह हमारी नई पीढ़ी समझ सकेगी? समझाना, अब कठिन सा लग रहा है, क्योंकि हम स्वयं इस परिवेश में अपने आप को ढाल चुके हैं। क्या फिर उस युग को वापस लाया जा सकता है? प्रश्न यह भी है क्या वास्तव में ऐसा परिवर्तन इतना जरूरी है कि मनुष्य, मनुष्य से ही प्रेम करना छोड़ दें और स्वयंभूः हो जाए?

यह परिवर्तन तो अब बड़ा दुखदायी सा लगता है क्योंकि यह मनुष्य को प्रकृति से, अन्य मनुष्यों, जीव-जंतुओं से और अन्य सभी से दूर कर रहा है और मशीनीकरण की ओर अग्रसर किये जा रहा है। इन पेड़-पौधों को मनुष्य अपनी बड़ी-बड़ी जरूरतों के लिए नष्ट किये जा रहा है। आज पानी भी बिक रहा है, कल को हवा भी बिकेगी। कोई ऐसा भी दिन आएगा जब मनुष्य प्राणवायु भी सुपर मार्केट से खरीदेगा और लोग इसको खरीदने के लिए भी तैयार रहेंगे।

खैर, इन सब बातों का सम्बन्ध हमारी जरूरतों से है, जरूरतें जितनी बढ़ेंगी, नुकसान उतना ही अधिक होगा और ये नुकसान हमारा अकेले का नहीं, ये समस्त प्राणियों व अन्य जीव-जंतुओं का हो रहा है। हम अपना आज सुधारने के चक्कर में अपना भविष्य बिगाड़ रहे हैं।

इसलिए हमें निःस्वार्थ भाव से एक साथ मिलकर इस परिवर्तन का विश्लेषण करना होगा और भविष्य को सुधारने में एक बड़ी भूमिका निभानी पड़ेगी। किसी ने सत्य ही कहा है - ‘संतोषम् परम सुखं’।





बेटियों का हो 'कल' और 'आज'

हरिमोम कुमार

कनिष्ठ अनुवादक

“जो था कल हाल, वही है आज,
नहीं बदले दुष्टों के काज,
क्या प्रगति, क्या विकास की बात,
न जब रक्षित बेटी की लाज,

हैं जानवर बेहतर मानव से,
है जंगली ये मानवी-समाज,
है अंधा तंत्र, अंधा कानून,
तभी गिरती नारी पर गाज,

सभी हैं मौन, सभी हैं बहरे,
रोएं और किसको दें आवाज,
बनो तुम पुनः लक्ष्मीबाई
ऐ चिड़ियों बनो खुद ही तुम बाज,

अति की भी है हद अब पार,
अब तो जागो ऐ सुप्त समाज,
हो जाए क्रांति, हाहाकार,
मगर हो खत्म दानवी राज,

हो रक्षित सभी बहू और बेटी,
भाड़ में जाए अन्य कोई काज,
बेटियां गाएं और मुस्काएं,
बेटियों का हो 'कल' और 'आज'।”

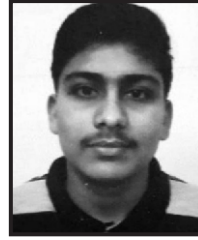




पूजा के बारह फूल

मोहन चंद्र गुप्ता

सेवानिवृत्त वरिष्ठ लेखापरीक्षक



अज्ञात शक्ति

पारस कुमार कोयड़

अतिथि रचनाकार

1. डरे हुए को अभय दान दो,
भूखे को अनाज का दान।
प्यासे को जलदान करो,
अपमानित का आदर सम्मान।।
2. विद्या दान करो अनपढ़ को,
विवाद ग्रस्त को आश्रयदान।
वस्त्रहीन को वस्त्रदान दो,
रोगी को औषधि का दान।।
3. धर्मरहित को धर्म सिखाओ,
शोकातुर को धीरज दान।
भूले को सन्मार्ग बता दो,
गृहविहीन को दो गृहदान।।
4. कर्म करो निःस्वार्थ भाव से,
मन में कभी न हो अभिमान।
अपने सम सबही को मानो,
फिर किस पर किसका एहसान।।
5. इन बारह पुष्पों से प्रभु का
करता जो अर्चन और ध्यान।
हो निष्काम प्रेमयुक्त उसको,
निश्चय मिलते हैं भगवान।।

आवश्यकता है एक मगर
कैसे जानेगा तू वह डगर
जिस डगर पर छिपी तेरी पहचान
तू स्वयं को कभी ना छोटा मान
तू तो सूरज-सा प्रकाशमान
तू समझ स्वयं को सूरज का तेज, कहाँ दबाया जाये
'तू भी है राणा का वंशज, तू फेंक जहाँ तक भाला जाये'

तू रास्ता रण का कभी ना छोड़
तू कभी स्वयं से मुंह ना मोड़
तू ब्रह्म पाश सारे अब तोड़
तू लगा दे अपना सारा प्राण
तू तान दे बस अब ब्रह्म बाण
अरे साहस ही है तेरा प्रमाण
अरे वीर तू सागर है, सागर को इस लोक गागर में कहाँ समाया जाये
'तू भी है राणा का वंशज, तू फेंक जहाँ तक भाला जाये'

होती है डग इतनी बीहड़
जितना हो तेरा ध्येय महान
तू लगा ध्यान स्वयं को पहचान
जानेगा तेरे भीतर ही छिपा है भगवान
तू कर चिन्तन अब जान अर्थ
नहीं तू करना अब समय व्यर्थ
कौरव सा शत्रु बना जब, अब युद्ध कहाँ तक टाला जाये
'तू भी है राणा का वंशज, तू फेंक जहाँ तक भाला जाये'



‘किन्नर - एक अभिशाप’

मनोज मधुकर कस्तूर

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

‘समाज’ - वो जगह, जहाँ हम सब रहते हैं। सबकी जहाँ एक पहचान और इज्जत है, जो उसकी आर्थिक परिस्थिति और रूतबे के अनुसार होती है। पर, उन लोगों का क्या? जो वक्त की आंधी से निकल नहीं पाते, जिन्हें कुछ पलों में ही समाज से दूर कर दिया जाता है, जिन्हें समाज में गैर और गिरी हुई नजरों से देखा जाता है। उन्हें अकेले ही पापी समाज का सामना करना पड़ता है - ‘क्योंकि समाज में होना ही, उनके लिए पाप समझा जाता है।’ लेकिन हम सबसे ये समाज बना है न कि समाज से हम, फिर क्यों? हम कैसे किसी के लिए कुछ ही पलों में बदल जाते हैं, जिन्हें हम कहते हैं- किन्नर, हिजड़ा, छक्का इत्यादि। ये कहानी ऐसे ही एक इंसान की है, जिसकी पहचान के साथ-साथ समाज के मायने भी उसके लिए बदल जाते हैं।

‘किन्नर - एक अभिशाप’

ये कहानी अनिल खन्ना जी के परिवार की है। खन्ना जी के परिवार में, स्वयं खन्ना जी, उनकी पत्नी कमलेश और तीन बच्चे हैं, जिनमें राजेश अपने छोटे भाई रूपेश और बहन स्नेहा से बड़ा है। राजेश 24 साल का एक बुद्धिमान लड़का है, उसे एम.कॉम. किए हुए 1 वर्ष से ऊपर गुजर चुका है और आजकल राजेश एक प्राइवेट कम्पनी में सुपरवाइजर की नौकरी करता है।

समाज में राजेश की एक पहचान है, लोग उसे समझदार और मेहनती लड़का मानते हैं। राजेश गुजरते वक्त के साथ अपने परिवार में बहुत खुश है। लेकिन कहते हैं न कि कभी-कभी खुद भगवान हमारी खुशियों का दुश्मन बन जाता है, ठीक वैसा ही राजेश के साथ भी हुआ। एक दिन अचानक राजेश के जीवन में भी तूफान आता है, जिसने उसे और उसके परिवार को पूरी तरह से झकझोर दिया। और दिनों की तरह एक शाम राजेश अपने ऑफिस से घर आ रहा था, कि अचानक पीछे से एक कार उसके आगे आकर रुकती है। राजेश को कुछ समझ में आता, कि इससे पहले ही गाड़ी में से कुछ आदमी बाहर निकले, उन सबके चेहरे नकाब से ढके हुए थे और कुछ ही पलों में राजेश को किडनैप कर लिया जाता है। भरी सड़क पर ये हादसा इतनी जल्दी हुआ कि किसी को और स्वयं राजेश को भी संभलने का मौका नहीं मिलता। इसी बीच गाड़ी में राजेश कुछ समझ पाता इससे पहले ही उसके सिर पर चोट मार कर उसे बेहोश कर दिया जाता है। उधर राजेश के मोहल्ले में, उसके इस तरह गायब हो जाने से चारों तरफ अजीब सा खौफ छाया हुआ है। पुलिस में इस घटना की रिपोर्ट दर्ज करा दी जाती है। मोहल्ले में सब लोग तरह-तरह की बातें कर रहे हैं और राजेश के घर मानो मातम ही छाया हुआ हो। इस घटना के तीन दिन बीत जाने पर भी, पुलिस राजेश का कोई सुराग नहीं ढूँढ़ पाती। अचानक एक दिन राजेश के घर पर फोन की घंटी बजती है - फोन राजेश की माँ श्रीमती कमलेश खन्ना उठाती हैं, तो दूसरी तरफ से राजेश की आवाज सुनते ही उनकी आँखों में आंसू आ जाते हैं और वो उसके बारे में पूछने लगती हैं। माँ के इतने सवालियों के जवाब में, वो सिर्फ इतना कहता है कि ‘वह ठीक है और कभी वापिस नहीं आ पायेगा।’ ये सुनते ही राजेश की माँ का सब्र का बाँध टूट जाता है और वो रोती हुई ही फोन पर उससे पूछती है - ‘कि वो उन सब को किस बात की सजा दे रहा है, वो कहाँ से बोल रहा है? और उसका इस तरह गायब हो जाना, वगैरह-2...!’ मगर राजेश की तरफ से कोई उत्तर नहीं मिलता और अपने आखिरी शब्द में ‘माँ’ कहकर राजेश फोन काट देता है। इधर माँ के मन में पिछले कई दिनों से आ रहे डरावने ख्यालात, किसी बड़ी अनहोनी को बता रहे थे जो कि राजेश के इस तरह फोन आने से एकदम मानो सच जैसे लगने लगते हैं। वैसे पिछले गुजरे दिनों में, इतना सब कुछ हो जाने की वजह से खन्ना परिवार पहले ही सदमे में था और उस पर अचानक राजेश का फोन इस तरह आने से हालात और गंभीर हो जाते हैं। पुलिस को राजेश के इस रहस्यमयी फोन के बारे में सूचना दे दी जाती है। उस दिन



के बाद फिर कभी राजेश का कोई फोन नहीं आता और पुलिस भी इस केस में कुछ खास पता नहीं कर पाती !

राजेश के अपहरण की घटना को दो वर्ष बीत चुके हैं, घर पर सब धीरे-धीरे सामान्य सा होता जा रहा है, सिवाय राजेश की यादों के। रूपेश अब कॉलेज में पढ़ता है और स्नेहा 12वीं में। सर्दियों के वक्त में, रूपेश और उसके दोस्त भोपाल घूमने का प्रोग्राम बना कर, दिसंबर के महीने में वहाँ पहुँचते हैं। सब कुछ ठीक चल रहा था कि एक दिन ट्रैफिक सिग्नल पर कुछ लोगों को भीख मांगते देख, रूपेश का चेहरा एकदम पीला पड़ने लगता है। उसकी आँखों में आँसू भी थे और गुस्सा भी, उसके चेहरे के हाव भाव पल-पल बदल रहे थे। वो कुछ देर, यूँ ही उसी तरफ देखता रहा, फिर अपने कुछ दोस्तों से बात कर वहीं रुक जाता है। उसके दोस्त भी उसे चलने के लिए नहीं कहते और आगे बढ़ जाते हैं। रूपेश सीधा सड़क पार कर दूसरी तरफ खड़े कुछ हिजड़ों के पास जाकर, उनमें से एक को गौर से देखने लगता है, उसकी आँखों में अभी भी आँसू तैर रहे थे। इस तरह किसी अनजान के इस कदर नजदीक आ खड़े होने से सभी किन्नर उसे सवाल भरी निगाहों से एकटक घूरने लगते हैं। सभी को एक ही तरफ देखते जैसे ही 'सीमा' अपने पीछे घूमती है तो उसी पल पत्थर हो जाती है, उसकी सूखी आँखों में आँसूओं को आसानी से पहचाना जा सकता है और धीरे-धीरे वो काँपने भी लगती है। आखिर हो भी क्यों न? उसके सामने उसका छोटा भाई जो खड़ा था। कुछ पल यूँ ही गुजरने पर कुछ समझते न देख सीमा वहाँ से एक तरफ भागने लगती है। उसे यूँ देख रूपेश उसे भागते हुए आवाज लगाता है- 'भईया ! रुक जाओ', कानों में ये शब्द पड़ते ही सीमा रुक जाती है। इतने में रूपेश भी उसके पास पहुँच जाता है और उससे बात करना चाहता है। सीमा, यानी राजेश उसे मना कर, स्वयं मिलने आने के लिए कहता है और रूपेश से उसका मोबाइल नंबर ले, रूपेश को आश्वासन देकर चली जाती हैं। उसी शाम, रूपेश अपने हॉस्टल में काफी परेशान सा घूम रहा था, कि अचानक 8.00 बजे के करीब उसके फोन की घंटी बजती है, फोन एक अनजान नंबर से आ रहा था, रूपेश जैसे ही फोन पर हैलो बोलता है तो उसे दूसरी तरफ से भरी आवाज में सुनाई देता है 'मेरे भाई, रूपेश....' इस आवाज में इतना दर्द था कि रूपेश की आँखों से आँसू गिर पड़ते हैं। उसे लगा मानो बरसों बाद कोई कुछ कहने की कोशिश कर रहा हो। रूपेश अपने को संभालते हुए बोला - राजेश भईया, ये आप हैं। उधर से आवाज आती है, 'राजेश नहीं, सीमा बोल मेरे भाई।' इतना बोल वो शख्स रोने लगता है और इधर रूपेश की भी यही हालात थी। रूपेश उससे कुछ बातें करने के बाद, उससे मिलने की जिद करने लगता है, पर सीमा उसे मना कर देती है और फिर फोन करने का वादा कर फोन काट देती है, इधर रूपेश हैलो-हैलो ही कहता रह जाता है। अगली सुबह वापिस रूपेश- उसी ट्रैफिक सिग्नल पर जाता है, जहाँ कल उसे उसका भाई मिला था। उसे सड़क के एक तरफ कुछ किन्नर खड़े हुए दिखाई देते हैं, जो आने-जाने वाली गाड़ियों में बैठे लोगों से भीख मांग रहे थे। रूपेश उनमें से एक के पास जाकर पूछता है कि - 'सीमा आज नहीं आई, क्या?' किसी को ऐसा सवाल पूछते देख, वो किन्नर उसे घूरते हुए पूछता है- 'तू कौन है?' वो बोला- 'मैं रूपेश हूँ।' ये नाम सुनते ही पास वाला किन्नर उसके पास आ, सड़क किनारे चलने का इशारा करता है। सड़क के किनारे की तरफ जाते हुए वो अपने साथी को आवाज लगा कहता है- ओ ! रानी, जरा मेरी तरफ भी देख लीजो ! मैं अभी आती हूँ रे...। किनारे पर पहुँचने के बाद, वो कहता है- 'मेरा नाम जूली है और तू यहाँ काय के वास्ते आया है?' तू सीमा को काय को पूछ रहा था? इतने पर रूपेश उसे अपने बारे में सब बताना शुरू करता है तो जूली उसे बीच में ही काटते हुए बोलती है- 'ऐ, सुन हमारा कोई परिवार, भाई वगैरह नहीं होता, कोई नहीं।' रूपेश कुछ कहना ही चाहता था कि, जूली बोली - अपने को सब मालूम है, मत बता और तू क्या पूछना चाहता है, मुझसे पूछ - 'मैं बतायेगी तेरे को सीमा के बारे में।' रूपेश बोला - 'भईया, कहाँ हैं?' इस पर जूली एकदम जोर से बोली- अब वो तेरा भाई-वाई नहीं है, हमारा कोई नहीं होता। ये सब सुनते देख, रूपेश अपने को नहीं संभाल पाता और रोने लगता है मगर जूली पर इस सबका कोई असर नहीं होता। वो जूली से बहुत कुछ पूछना चाहता है, पर जूली उसे ज्यादा कुछ नहीं बताती है और रूपेश को वहाँ से निराश हो लौटना पड़ता है। वो पूरे दिन चैन से नहीं रह पाता और अगले दिन वापिस जूली के पास जाकर पूछता है- 'सीमा आई है क्या?' लेकिन उसे जूली से फिर वही उत्तर



मिलता है। उसी शाम उसके सभी दोस्त भोपाल से घर आ जाते हैं और रूपेश घर वालों को बहाना बनाकर कुछ और दिन रुकने के लिए अनुमति ले लेता है। रूपेश कई दिनों तक लगातार जूली से सीमा के बारे में पूछता रहता है और एक दिन बिना कुछ कहे जूली के सामने जाकर रोने लगता है। रूपेश की ये हालात देख, जूली भी पूरी तरह अंदर से टूट चुकी थी। उस दिन वो रूपेश को मना नहीं करती और रूपेश को एक जगह बैठाकर बोलना शुरू करती है। उसके अनुसार, सीमा उनके साथ पिछले डेढ़ साल से रह रही थी। उसे गुरु माँ दिल्ली से खरीद कर लाई थी, वही हम सबकी माई-बाप है, सीमा को ये नाम उन्होंने ही दिया था। शुरू-शुरू में सीमा एकदम चुपचाप और रोती रहती थी। वह हमेशा भगवान से पूछती थी कि - 'उसे किस बात की सजा मिली है, जो इस पूरे जन्म में कभी पूरी नहीं हो सकती है।' शुरू-शुरू में वो कुछ भी नहीं कर पाती थी, इस वजह से कई बार उसकी पिटाई की गई, एक हद तक सहन करने के बाद वो टूट गई और एक पत्थर दिल इंसान बन गई, जिसमें कोई जज्बात नहीं थे। उस दिन अचानक तुम्हें यँ सामने देखकर वो खुद को संभाल नहीं पाई और फिर धंधे पर नहीं आई। रूपेश बोला - 'ये सब कैसे हुआ?' जूली बोली - 'सीमा ने मुझसे कहा था कि गलत लोगों की संगत उसे यहाँ तक ले आई। ऑफिस जाते वक्त बस में कुछ लोगों से उसकी मुलाकात हुई थी और उनकी संगत के कारण आज वो इस दुनिया में है।' सीमा को बाद में पता चला कि उन लोगों का मासूमों को फंसाने का ही धंधा था। राजेश किन्नर नहीं था, उसे बनाया गया था, जिस वजह से उसे कई बार अपने साथियों के कोप का भाजन बनना पड़ा। इतना सुनते-सुनते रूपेश रूँधे हुए गले से पूछता है - 'अब सीमा कहाँ है?' इस सवाल पर जूली चुप हो जाती है। उसे यँ देख रूपेश को लगता है कि मानो कोई अपना उससे बहुत दूर जा चुका है। जूली से कुछ जवाब न मिलते देख, रूपेश कंपकंपाती आवाज में अपना प्रश्न फिर पूछता है, इस बार जूली के सब्र का बांध भी टूट जाता है और वो भी रो पड़ती है और रोते हुए बोली - 'सीमा ने इस जीवन का अंत करके इस अभिशाप से हमेशा-हमेशा के लिए मुक्ति पा ली है।' ये सुनते ही रूपेश अपना सिर पकड़कर बैठ जाता है, जूली बोलती रहती है - 'जब तुम्हारी मुलाकात उससे हुई थी, उस पल से ही वे काफी उदास और परेशान थी। कुछ दिन बाद अचानक एक शाम, उसने अपने हाथ की नसों काटकर, अपने इस नरक जैसे जीवन का अंत कर लिया। हमने उसे बचाने की बहुत कोशिश की, पर तब तक बहुत देर हो चुकी थी।' इतना सुन रूपेश अपना हौंसला खो देता है और बिलख-बिलख कर रोने लगता है। उसे इस तरह रोते देख, जूली बोली - 'हम सबका एक दिन यही हाल होना है, हमें इस समाज में गंदगी के रूप में देखा जाता है। हमसे कोई भी, किसी तरह का रिश्ता नहीं रखना चाहता। अगर हम कुछ अच्छा काम करके अपना पेट पालने की कोशिश करते हैं, तो ये समाज हमें ऐसा नहीं करने देता। सब की नजरें हम से, हमेशा अनगिनत सवाल पूछती नजर आती हैं, मानो हमने कोई बड़ा गुनाह किया हो। कोई भी हमें नहीं देखना चाहता, जैसे हम जीते जागते इंसान न होकर कोई जानवर हों। हमारे भी जज्बात और सपने होते हैं, हम भी प्यार के भूखे हैं। परंतु, ये जालिम समाज हमें अपना ही नहीं चाहता, हमें कोई भी काम करने के लिए नहीं देता, तो हमें भी अपना पेट पालने के लिए भीख मांगना, नाच-गाना इत्यादि जैसे धंधे करने पड़ते हैं। हम किसी को नुकसान नहीं पहुंचाते फिर भी हमें हँसी का पात्र समझा जाता है। इतना सब कुछ सहने पर क्यूँ कोई जिंदा रहना चाहेगा, आखिर क्यूँ? फिर भी हम नहीं मर सकते, क्योंकि हमारी भी कुछ मजबूरियाँ हैं।' इतना कहते-कहते जूली का भी गला भर आया, उसकी आँखों से भी धीरे-धीरे आँसू बह रहे थे। जो खुद ब खुद उसके जीवन का दर्द बयाँ कर रहे थे। इतना कुछ कहने के बाद जूली वहाँ से चली जाती है और अपने काम में मशगूल हो जाती है। इधर रूपेश अपने भाई राजेश उर्फ 'सीमा' की सच्चाई जानकर पूरी तरह से टूट चुका है। वो रोते-रोते भगवान से पूछता है - हे भगवान! जब समाज में इनका कोई स्थान नहीं है, तो तूने इन्हें बनाया ही क्यूँ? इस अभिशाप भरी नरक जैसी जिंदगी का क्या वही होता है, जो उसके बड़े भाई राजेश उर्फ सीमा के जीवन का हुआ। आखिर, ऐसा क्यूँ है? कब तक ये, यँ ही चलता रहेगा भगवान? रूपेश भगवान से शिकायत करते जा रहा था और लगातार रोये भी जा रहा था, मगर उसके इस दर्द को समझने वाला कोई नहीं था - कोई भी नहीं।





‘वो मरती हुई इंसानियत’



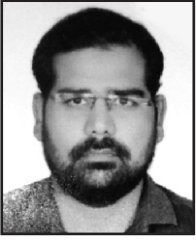
मनोज मधुकर कस्तूर

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

वैसे तो बलात्कार शब्द ही बहुत घिनौना है पर भारत के वर्तमान दौर में यह घटनाएं, तो मानो एक आम बात लगती हैं। इनमें से कुछ घटनाएं तो इंसानियत को भी शर्मसार कर देती हैं। ऐसी ही एक भयानक घटना विशाखापट्टनम में अक्टूबर 2017 के दौरान हुई थी, जिसने पूरे भारतीय समाज को हिला कर रख दिया था। उसी घटना पर आप सभी का ध्यान, हमारे अन्दर की दम तोड़ती इंसानियत के ऊपर लाने का एक प्रयास, कुछ पंक्तियों के रूप में मेरे द्वारा लिखित शीर्षक में मैंने किया है -

कुछ दिन बीते विशाखापट्टनम में इंसानियत फिर शर्मसार हुई,
भरे दिन में बीच सड़क पर एक आबरू फिर तार-तार हुई,
एक घर की इज्जत गुस्से में निकल कर बाहर क्या आयी,
देख उस भूखे भेड़िये को सामने वो क्यूँ जोर-जोर से चिल्लाई,
उम्मीद कुछ रही होगी उसे, बीच सड़क पर खुद को सोच के,
उसे क्या पता था इंसान नहीं वहाँ पत्थर खड़े थे सभी घेर के,
वो भेड़िया उसके शरीर को नोच-2 के यूँ खुलेआम खाता रहा,
दर्द भरी आवाजें सुनकर भी, पत्थरों से एक भी इंसान न जिंदा हुआ,
क्या गलती रही होगी उसकी, कि उसके साथ भी ऐसा कुछ हुआ,
अब परिवार की बेड़ियाँ तोड़ना क्या औरत के लिये इतना दुश्वार हुआ,
कई कानों ने वो आवाजें सुनी और आंखों ने वो मंजर देखा होगा,
पर सब हाथ सिर्फ वीडियो रिकॉर्डिंग और आंखें घूरने के काम रहीं,
उस दिन भरे बीच बाजार फिर से वो मरती हुई इंसानियत दिखी,
फिर एक बार एक औरत की आबरू खुले बाजार यूँ बिकी,
यह देख-सुन कर सबको जरूर बहुत गुस्सा आया होगा,
पर मैं कर भी क्या सकता था सोच कर खुद को समझाया भी होगा,
बड़ी-बड़ी बातें, झूठे दिखावे तो आजकल हम सब करने लगे हैं,
अपनी इंसानियत को गिरवी रख कर आज सभी जिंदगी जीने लगे हैं,
पता नहीं अगर मैं वहां होता तो क्या करता, पर अपने अंदर के इंसान को यूँ पत्थर न बनने देता,
इंसानियत अब नहीं दिखती कहीं, लगता है विलुप्ति की कगार पर है,
ये पंक्तियां नहीं एक छोटी सी कोशिश है वरना ये एक की नहीं हम सबकी हार है।





कृति-4



दीपक देवलिया

लेखापरीक्षक

नहीं है कुछ भी मुझको कहना,
चुप होकर सब यूँ सहना।

जो कहना आप ही कह लो,
मुझे नहीं है कुछ भी कहना।

गर मैं भी यूँ आप सा होता,
बदनामी के बीज मैं बोता।

नजरें सबसे छुपा के चलते,
न कोई घर में चैन से सोता।

बदले का मुझमें भाव नहीं है,
धैर्य है मुझमें, ताव नहीं है।

आप हो अपने इतना कह दूँ,
मुझे बदनामी का चाव नहीं है।

आपकी करनी आप भरोसे,
मेरी करनी है मुझको भरना।

मैं तो चुप हूँ आप भी चुप रहें,
बेहतर है बस चुप ही रहना।

मैं भी सह लूँ आप भी सह लें,
शान्ति से चुपचाप ही रह लें।

नहीं तो बस ये चलता रहेगा,
एक-दूजे का कहना-सुनना।

एहसास मुझे ये आज ही है,
आपको भी कल होना ही है।

सपनों के ढहने के गम में,
आज नहीं तो कल रोना ही है।

नहीं समझ में आता मुझको,
बातों, रिश्तों को उलझाना।

सीखा है मैंने इतना बस,
है प्यार से सब कुछ सुलझाना।

एहसास करें कि कैसा होगा,
बिन बात के सपनों का ढहना।

सपनों बिन जीवन ऐसा,
जैसे जल बिन मछली का रहना।





हिंदी लेखन की सामान्य भ्रांतियां/गलतियां

धनंजय कुमार

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

हिंदी भारत की राजभाषा के साथ-साथ देश-विदेश में निवासरत भारतीयों की संपर्क भाषा भी है। हिंदी जिस प्रकार बोली जाती है, उसी प्रकार लिखी व समझी जाती है अर्थात् हिंदी को बोलने, लिखने एवं समझने में कोई विरोधाभास नहीं है। जबकि विश्व की संपर्क भाषा के रूप में स्थापित अंग्रेजी में बोलने, लिखने एवं समझने में अंतर होता है। परंतु क्षेत्र, परिवेश एवं लोकभाषा के कारण हिंदी लेखन में भिन्नता पाई जाती है जिसके कारण सामान्य गलतियों का उपयोग आमजनों द्वारा किया जाता है। राजभाषा विभाग द्वारा हिंदी वर्तनी का मानकीकरण किया गया है, जिससे हिंदी का सर्वत्र एवं सही उपयोग सभी लोगों के द्वारा किया जाए तथा कम्प्यूटर पर हिंदी शब्दों का ठीक प्रकार से टंकण कार्य किया जाए। हिंदी की सामान्य गलतियों को सुधार कर शुद्ध एवं सरल हिंदी का उपयोग किस प्रकार किया जाए उसका उल्लेख नीचे किया गया है।

1. जहां श्रुति मूलक य, व का प्रयोग विकल्प से होता है, वहां य, व का प्रयोग नहीं किया जाए।

सामान्य प्रयोग

किये, गये, गयी, हुवा, जावेगा, जावेगी, जाये-जावे, लिये, हुवे, नयी, आयी, चाहिये, इसलिये

शुद्ध/मानक प्रयोग

किए. गए, गई, हुआ, जाएगा, जाएगी, जाए, लिए, हुए, नई, आई, चाहिए, इसलिए

2. संयुक्त व्यंजन के रूप में जहां पंचमाक्षर (ड, ज, ण, न, म) के बाद सवर्गीय शेष चार वर्गों में से कोई वर्ण हो तो एकरूपता और मुद्रण/लेखन की सुविधा के लिए अनुस्वार का ही प्रयोग करना चाहिए। अर्थात् पंचमाक्षर के स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग करना चाहिए।

सामान्य प्रयोग

गङ्गा, चञ्चल, ठण्डा, सन्ध्या, सम्पादक, सम्बन्ध, कङ्कड़, कङ्गन, पञ्छी, घण्टा, डण्डा, कन्द, परम्परा, कम्बल, पङ्ख, चञ्चल, पङ्जाब, ठण्ड, दन्त, गन्ध, गुम्फित, खम्भा

शुद्ध/मानक प्रयोग

गंगा, चंचल, ठंडा, संध्या, संपादक, संबंध, कंकड़, कंगन, पंछी, घंटा, डंडा, कंद, परंपरा, कंबल, पंख, चंचल, पंजाब, ठंड, दंत, गंध, गुंफित, खंभा

3. चंद्रबिंदु के बिना प्रायः अर्थ में भ्रम की गुंजाइश रहती है, परंतु चंद्रबिंदु के प्रयोग में टाइपिंग में कठिनाई हो तो चंद्रबिंदु के स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग किया जा सकता है। केवल ँ का प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए।

सामान्य प्रयोग

कहाँ, जहाँ, वहाँ, हँसना, आँगन, चाँद, हँस

कंप्यूटर पर टाइपिंग हेतु मानक

कहां, जहां, वहां, हंसना, आंगन, चांद, हंस

4. अंग्रेजी के जिन शब्दों में अर्धविवृत 'ओ' ध्वनि का प्रयोग होता है, उसके शुद्ध रूप का हिंदी में प्रयोग अभीष्ट होने पर ओ की मात्रा का प्रयोग किया जाए। ॅ पर बिंदु का प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए।

डॉक्टर, कॉफी, कॉलेज, नॉलेज, ऑफ, ऑडिट, ऑफिस, ऑक्सीजन, ऑन, ऑफर

5. संस्कृतमूलक तत्सम शब्दों की वर्तनी को ज्यों-का-त्यों ग्रहण किया जाए।

सामान्य प्रयोग

ब्रम्हा, चिन्ह, उरिण, ग्रहीत, द्रष्टव्य, प्रदर्शिनी, अत्याधिक,
अनाधिकार, अर्द्ध, उज्ज्वल, तत्त्व, रिण, रिषि, रितु, रिचा,
अपरान्ह, पूर्वान्ह, मध्यान्ह, चिन्ह, ब्राम्हण, आव्हान

6. यह देखा गया है कि सामान्यतः ड के स्थान पर ङ का प्रयोग किया जाता है।

सामान्य प्रयोग

रेड़ियो, रोड़, ढकना, डडा, डरना, ढंग, ढांचा

7. इसी प्रकार ङ के स्थान ड का प्रयोग किया जाता है।

सामान्य प्रयोग

पडना, घोडा, अरोडा, पढना, बाढ, सडक, साडी, खाडी

8. श के स्थान पर ष एवं ष के स्थान पर श का प्रयोग किया जाता है।

सामान्य प्रयोग

विष्वास, कुषल, दुष्य, विशय, कृशक, करिष्मा, निष्फल

9. श के स्थान पर स, एवं स के स्थान पर श का प्रयोग किया जाता है।

सामान्य प्रयोग

कुसलता, स्यामल, शाबास, विस्वास, कोस, सादी, तपस्या

10. संयुक्त र क प्रचलित तीनों रूप ँ, ँ, ँ का यथावत प्रयोग करना चाहिए। कम्प्यूटर पर टाइपिंग के दौरान ँ के स्थान पर केवल ँ का प्रयोग किया जाता है जो नहीं किया जाना चाहिए।

धर्म, कर्म, सर्प, अर्थ, कार्यवाई, कार्यवाही, वर्तनी, क्रम, द्रव्य, भ्रम, प्रचलन, राष्ट्र, ट्रक, ड्रम, ट्रेन, ट्रॉली, ट्रॉजिट, ट्रांसफर
इसके अतिरिक्त शब्दगत त्रुटियां प्रयोग की जाती हैं। जिसका मानक प्रयोग किया जाना चाहिए।

11. निम्नलिखित शब्दों में अ क स्थान पर आ का प्रयोग किया जाना चाहिए।

अशुद्ध	शुद्ध/मानक	अशुद्ध	शुद्ध/मानक
समाजिक	सामाजिक	अहार	आहार
अविष्कार	आविष्कार	बजार	बाजार
रजनैतिक	राजनैतिक	व्यवहारिक	व्यावहारिक
सामर्थ	सामर्थ्य	व्यवसायिक	व्यावसायिक
संस्कृतिक	सांस्कृतिक	परिभाषिक	पारिभाषिक

12. निम्नलिखित शब्दों में आ के स्थान पर अ का प्रयोग किया जाना चाहिए।

अशुद्ध	शुद्ध मानक	अशुद्ध	शुद्ध मानक
अत्याधिक	अत्यधिक	अस्वास्थ	अस्वस्थ
आध्यात्म	अध्यात्म		



13. निम्नलिखित शब्दों में ई के स्थान पर इ का प्रयोग किया जाना चाहिए।

अशुद्ध	शुद्ध/मानक	अशुद्ध	शुद्ध/मानक
तिथी	तिथि	पीएंगे	पिंएंगे
प्राप्ती	प्राप्ति	उपाधी	उपाधि

14. निम्नलिखित शब्दों में इ के स्थान पर ई का प्रयोग किया जाना चाहिए।

अशुद्ध	शुद्ध/मानक	अशुद्ध	शुद्ध/मानक
परिक्षा	परीक्षा	तृतिय	तृतीय
प्रतिक्षा	प्रतीक्षा	शताब्दि	शताब्दी
श्रीमति	श्रीमती		

15. निम्नलिखित ई से समाप्त होने वाले एक वचन संज्ञा स्त्रीलिंग शब्द जब बहुवचन में परिवर्तित किया जाता है तब ई से इ में परिवर्तित हो जाती है।

एक वचन	बहुवचन
लड़की, दवाई, रजाई, मिठाई, नदी, चाबी, थाली, रीति, सीढ़ी	लड़कियां, दवाइयां, रजाइयां, मिठाइयां, नदियां, चाबियां, थालियां, रीतियां, सीढ़ियां

16. ऊ के अंत वाले एक वचन शब्दों में बहुवचन में परिवर्तित करते समय ऊ को उ में परिवर्तित करना चाहिए।

एक वचन	बहुवचन
हिंदू, गुरु, झाड़ू, आलू, वधू	हिंदुओं, गुरुओं, झाड़ुओं, आलुओं, वधुओं

17. निम्नलिखित में ऐ के स्थान पर एक ए प्रयोग किया चाहिए।

अशुद्ध	शुद्ध/मानक	अशुद्ध	शुद्ध/मानक
लिए	लिए	महिलाएं	महिलाएं
गए	गए	भाषाएं	भाषाएं
आईए	आइए	चाहिए	चाहिए

18. निम्नलिखित में ए के स्थान पर ऐ का प्रयोग किया जाना चाहिए।

अशुद्ध	शुद्ध/मानक	अशुद्ध	शुद्ध/मानक
एच्छक	ऐच्छक	एसा	ऐसा

19. निम्नलिखित में ओ के स्थान पर औ का प्रयोग किया जाना चाहिए।

अशुद्ध	शुद्ध/मानक	अशुद्ध	शुद्ध/मानक
ओद्योगिक	औद्योगिक	बिछोना	बिछौना
पोधा	पौधा	खिलोना	खिलौना

20. निम्नलिखित में औ के स्थान पर ओ का प्रयोग किया जाना चाहिए।

अशुद्ध	शुद्ध/मानक	अशुद्ध	शुद्ध/मानक
त्यौहार	त्योहार	रौब	रोब



21. हिंदी भाषा के अनेक शब्दों में उ के स्थान पर ऊ का प्रयोग किया जाता है जो कि भाषा का मानक रूप नहीं है। र व्यंजन के शब्दों में उ, ऊ की मात्रा में विशेष रूप से ध्यान देना चाहिए।

सामान्य प्रयोग

शुद्ध/मानक

रूपए, रूई, पुरुष, रूचि, रूक, मूंह, रूमाल, बिंदू

रुपए, रुई, पुरुष, रुचि, रुक, मुंह, रुमाल, बिंदु

22. हिंदी वर्तनी संबंधी सामान्य अशुद्धियों का प्रयोग निम्नानुसार किया जाना चाहिए।

अशुद्ध	शुद्ध/मानक	अशुद्ध	शुद्ध/मानक
स्त्रोत	स्रोत	आशीर्वाद	आशीर्वाद
श्रृंखला	शृंखला	सौहार्द	सौहार्द
अनुग्रहीत	अनुगृहीत		
श्रृंगार	शृंगार	उपरोक्त	उपर्युक्त
सर्जन	सृजन	ग्रहीत	गृहीत
श्रोत	स्रोत	गृहीता	ग्रहीता
श्रद्धा	श्रद्धा	उद्देश्य	उद्देश्य
ईर्षा	ईर्ष्या	क्योंकी	क्योंकि
पूर्ती	पूर्ति	रात्री	रात्रि

प्रत्येक भाषा का अपना-अपना वाक्य विन्यास होता है, जिसके आधार पर वाक्यों का निर्माण किया जाता है। हिंदी एवं अंग्रेजी भाषा का वाक्य विन्यास भी अलग-अलग है, परंतु कार्यालय के नाम का हिंदी अनुवाद अंग्रेजी के वाक्य विन्यास के अनुसार किया जाता है जो कि हिंदी के वाक्य विन्यास के विपरीत है। यथा

सामान्य प्रयोग (अंग्रेजी वाक्य विन्यास)

शुद्ध/मानक प्रयोग (हिंदी वाक्य विन्यास)

कार्यालय प्रधानमंत्री

प्रधानमंत्री का कार्यालय

कार्यालय मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री का कार्यालय

कार्यालय महालेखाकार

महालेखाकार का कार्यालय

कार्यालय कलेक्टर

कलेक्टर का कार्यालय

कार्यालय पुलिस अधीक्षक

पुलिस अधीक्षक का कार्यालय

उपर्युक्त वर्णित वाक्यों में स्पष्ट है कि पहले वाक्य का आशय कार्यालय का प्रधानमंत्री है, जबकि प्रधानमंत्री का कार्यालय होना चाहिए। पहले वाले वाक्य में कार्यालय की प्रधानता है, जबकि दूसरे वाक्य में पद की प्रधानता है। पदाधिकारी का कार्यालय होता है न कि कार्यालय का पदाधिकारी। अतः हिंदी के वाक्य विन्यास के अनुसार कार्यालय का नाम लिखा जाना चाहिए।

इसी प्रकार कार्यवाही एवं कार्रवाई शब्द में बहुतायत गलत प्रयोग किया जाता है। कार्यवाही proceeding का हिंदी रूपांतरण है, जबकि कार्रवाई action का हिंदी रूपांतरण है। अतः इसका प्रयोग सावधानी पूर्वक किया जाना चाहिए। किसी सभा/बैठक/समिति/संसद की कार्यवाही चल रही है। बैठक के कार्यवृत्त अनुसार अनुवर्ती कार्रवाई की जा रही है। प्राप्त पत्र पर आवश्यक कार्रवाई की गई है।





तारों की छांव में दुर्ग विजय



सुदेश अरोरा

माताश्री विनय अरोरा

प्रातःकाल का समय था। माता जीजाबाई अभी-अभी स्नान करके निबटी थीं और रामगढ़ की मुंडेर पर बैठी अपने केशों को सुखा रही थीं। सहसा उनकी दृष्टि दूर प्रदेश में खड़े कोंडाणा दुर्ग पर पड़ी और उस पर लहराते मुगलध्वज को भी उन्होंने देखा।

मुगलध्वज क्या था? मराठों को औरंगजेब की चुनौती थी। यही वह दुर्ग था जो कुछ समय पूर्व मराठों के अधिकार में था, पर एक सन्धि के कारण वह मुगलों के हाथ में चला गया था। क्या मराठा उसे लौटा न सकेंगे? क्या महाराष्ट्र की नाक के तले पराजय का यह कलंक सदा-सदा के लिए हमारे शत्रु के विजयध्वज का आधारस्तम्भ बना रहेगा! नहीं, मराठों को पुनः दुर्ग पर अधिकार करना होगा, नहीं तो उसके बिना इस प्रदेश में हमारी किलेबन्दी व्यर्थ है, शत्रु का दखल हर सूरत में समाप्त करना होगा।

मुगलध्वज को फहरते देख जीजाबाई का स्वाभिमान फुंकार उठा। उन्होंने तुरंत शिवाजी को बुलाकर संकेत किया -

बेटा! सामने कोंडाणा के उस किले को देख रहे हो और देख रहे हो उस पर लहराते उस मुगलध्वज को! मैं आदेश देती हूँ कि कल सूर्योदय से पूर्व ही इस पर मराठों का अधिकार होना चाहिए, ताकि मैं कल इसी समय उस पर केसरिया ध्वज लहराते देख सकूँ।

माँ ने अटल आदेश दे तो दिया पर दुर्ग को जीतना खालाजी का घर तो था नहीं। किला दुर्गम पहाड़ी के शिखर पर खुला यमलोक का द्वार था, जहां चढ़ना असम्भव नहीं तो कठिनतम अवश्य था। फिर उसका मुख्य रक्षक था राजपूत वीर उदयभान जो तलवार का धनी और पराक्रम में भी अद्वितीय था। उसकी विशाल सेना, असंख्य अस्त्र-शस्त्र तथा कभी खत्म न होने वाली भोजन सामग्री के कारण दुर्ग और भी अजेय बन गया था। इसलिए माँ की प्रतिज्ञा को सुनकर एक बार तो शिवाजी भी चिंता में पड़ गये, उनके आत्मविश्वास में भी संदेह की दरार पड़ गई।

किन्तु, शिवाजी शीघ्र ही संभल गये उन्होंने मन ही मन माँ भवानी का स्मरण किया और तन्मय होकर उनसे सिद्धि और साधना दोनों के लिए प्रार्थना की। तभी उनकी स्मृति में ताना जी का नाम बिजली की तरह दौड़ गया, मानो घने अंधकार में प्रकाश की एक किरण उन्हें दिखाई दे गई हो। वे लपककर उठ खड़े हुए और माँ के चरण छूकर बोले- 'आपका आदेश पूर्ण होकर रहेगा, माँ! तानाजी के रहते हमें दुर्ग विजय में तनिक भी संदेह नहीं।'।

किन्तु, आज ही तो ताना के पुत्र रायबा का विवाह है। घर में समारोह की तैयारियां हो रही होंगी। घर आंगन की स्त्रियां सुहाग के मंगलगीत गा रही होंगी। उधर तानाजी भी आज पिता का कर्तव्य निभाने में व्यस्त होंगे, और जब उन्हें अनायास ही युद्ध का निमंत्रण मिलेगा तो... तो तानाजी तनिक भी विचलित न होंगे ऐसी शिवाजी के हृदय ने गवाही दी। वे सिपाही हैं! मैं जानता हूँ कि विवाह मण्डप में भी कृपाण उनके अंगसंग विद्यमान होगी और शहनाइयों की गूंज से नगाड़ों की हुंकार में कूद पड़ने में उन्हें एक क्षण भी नहीं लगेगा।

उन्होंने एक संक्षिप्त सा पत्र लिखा - 'माँ भवानी ने भक्त से प्राणों की दक्षिणा मांगी है! आज अभी और इसी समय कोंडाणा दुर्ग को जीतने के लिए आपका प्रस्थान आवश्यक है। विवाह के रंग में भंग के लिए क्षमा चाहता हूँ।'।

सन्देश का अन्तिम वाक्य भी पूरा न हो पाया था कि ताना जी उचक कर घोड़े की पीठ पर जा बैठे। विवाह मण्डप से एकाएक उन्होंने ऐसे मुंह मोड़ लिया मानो रायबा उनका कुछ लगता ही नहीं। पलक झपकते ही वे शिवाजी के सामने रामगढ़ में उपस्थित थे और उनके



साथ थे उनके भाई लुरिया जी।

दोनों वीरों में आंखों ही आंखों में कुछ बातें हुई और अगले ही क्षण तानाजी अपने एक हजार मावली सरदारों के साथ कोंडाणा की ओर कूच कर चुके थे।

दुर्ग पर आक्रमण करने का केवल एक ही मार्ग था - दुर्ग के जिस एकांत मार्ग में रक्षकों का पहरा नहीं था, वहां रात के अंधियारे में रस्सियों की कुमक लगाकर कुछ मावली सरदार ऊपर चढ़ जाएं और भीतर उतर कर दुर्ग का तोरणद्वार खोल दें। ऐसा ताना जी ने विचार किया।

सूर्य छिप गया, रात का अन्धकार धीरे-धीरे घना हो गया। बस आक्रमण का यही सबसे उचित अवसर था। तानाजी ने अपनी पूर्व योजना के अनुसार सेना को दो टुकड़ों में बांट दिया। पांच सौ चुने हुए सैनिकों को लुरियाजी के साथ किले के मुख्य फाटक पर छोड़कर उन्हें आदेश दे गए कि आप यहीं प्रतीक्षा करें और फाटक खुलते ही धावा बोल दें। अपने शेष पांच सौ वीरों को लेकर ताना जी दुर्ग के प्राचीर पर चढ़ने की चेष्टा करने लगे।

गोह को रस्सी से बांधकर उसे इस अन्दाज से ऊपर फेंका गया कि पहली उछाल में ही वह दुर्ग की मुंडेर पर अपने फौलादी पंजों से चिपक गई। बस फिर क्या था उसके सहारे लटकती रस्सी को पकड़कर पहले एक अकेला जवान ऊपर पहुंचा। ऊपर से उसने एक मोटा मजबूत रस्सा नीचे लटकाया, जिसे पकड़-पकड़कर बीसियों-पचासों सैनिक ऊपर पहुँचने लगे। नीचे खड़े माबलों का उत्साह आपे में नहीं समा रहा था। वे शत्रु पर टूट पड़ने के लिए उतावले हो रहे थे। प्रत्येक को यही लग रहा था कि कहीं आज की युद्ध क्रीड़ा से वह वंचित न रह जाये। इसी होड़ में एक अकेले रस्से पर अनेकों हष्ट पुष्ट मावली वीर एक साथ लपक पड़े। अभी आधे भी सिपाही ऊपर न पहुंच पाए थे कि रस्सी चरमरा कर टूट गयी। नीचे के सिपाही नीचे और ऊपर के ऊपर रह गए। हाँ तानाजी अवश्य ऊपर पहुंच गए।

रात के सन्नाटे में चरमराहट का सरल सा शब्द भी शत्रु के कान खड़े करने को बहुत था। आहत पाकर दुर्ग का पहरेदार चौंका, खतरे का नगाड़ा बजा दिया गया और देखते ही देखते कोंडाणा का नीरव दुर्ग हुंकारों और ललकारों से गूंज उठा।

रस्सी टूट चुकी थी पर तानाजी का उत्साह न टूटा था। वे अपने मुट्ठी भर सैनिकों को लेकर शत्रु पर टूट पड़े। इधर मराठे थे और उधर राजपूत। कोई किसी से कम न था।

भयंकर युद्ध छिड़ गया। लाशों के ढेर लग गए। चीत्कार और हाहाकार से आकाश गूंज उठा।

कोई पलड़ा झुकते न देखकर तानाजी बिजली के वेग से आगे बढ़े और उन्होंने शत्रु पक्ष पर इतनी जोर से आक्रमण किया कि उसके पांव उखड़ गए। मावली सरदारों ने समझा कि मैदान मार लिया, पर कहां? उदयभान तो अभी रंगमंच पर उतरा ही न था - छः फीट का भीमकाय जवान जिसकी टक्कर का दूसरा वीर इलाके भर में न था। अब उसकी बारी थी। हाथी सा चिंघाड़ता हुआ तानाजी की ओर लपका।

तानाजी भी इसी क्षण की प्रतीक्षा में थे। मुगलों के टुकड़ों पर पलने वाले देशद्रोही को साक्षात् देखकर उनकी आंखों से चिंगारियां निकलने लगीं। वे उसे चबा जाने के लिए झपटे। आज उनकी फुर्ती देखने योग्य थी। उदयभान हाथी सा भीमकाय था, तो तानाजी सिंह से प्रचण्ड। दोनों में तुमुलयुद्ध छिड़ गया। जब तानाजी का वार निशाने पर पड़ता तो मावली हर्ष से पागल हो उठते। उदयभान की तलवार का हल्का सा भी वार पड़ता तो उनके चेहरे सूख जाते। समय व्यर्थ बीतते देख तानाजी ने अपने बचाव की चिंता छोड़कर उदयभान पर भरपूर वार किया। उदयभान बुरी तरह घायल हो गया। पर वह भी राजपूत था। प्रतिहिंसा के आवेश में तानाजी पर जो भाला फेंका वह उनके शरीर के आरपार हो गया। उदयभान ने अपनी इस सफलता पर भयंकर गर्जना की।

तानाजी भाले की मार से धरती पर लुढ़क गए। उन्हें देखकर उनकी सेना के भी पांव उखड़ गये। पर यह क्या? तानाजी एकाएक उठ



खड़े हुए और बुझते दीपक की तरह उन्होंने अपने जीवन का सबसे गहरा और अंतिम दांव मारा। जिसका निशाना था उदयभान, ताना की चोट खाया व्यक्ति कभी नहीं बचा। पर उदयभान का मारा भी आज तक कभी युद्ध क्षेत्र से जीवित लौट कर नहीं आया। दोनों वीर एक साथ धरती पर गिर पड़े कभी न उठने के लिए।

उदयभान को यमलोक पहुंचाकर तानाजी ने अपनी सेना के लिए विजय का मार्ग खोल दिया और उधर से मावली वीरों ने दुर्ग के दोनों द्वारा खोल दिए। लुरियाजी अपने पांच सौ साथियों के साथ दुर्ग में घुस गए। जो तानाजी के हाथ से बच निकले थे उन्हें लुरियाजी ने यमलोक पहुंचा दिया। जो अड़े, वो मरे। जिन्होंने शस्त्र डाल दिए, मावलियों ने उन्हें बन्दी बना लिया।

तब तक आकाश में सूर्य की गुलाबी किरणें भी प्रगट हो गयीं थीं। किले के शिखर से तीन तोपें दागी गईं - धांय! धांय! धांय! दुर्ग विजय की दशा में शिवाजी का यही आदेश था। तोप की गूंज से वे समझ गए कि गढ़ जीत लिया गया है। पर उन्हें पता चला कि सिंह चला गया है तो उनके हृदय में हर्ष और विषाद का द्वंद्व छिड़ गया। उस नर सिंह की स्मृति में कोंडाणा दुर्ग आज भी सिंहगढ़ के नाम से प्रसिद्ध है।





समझ



अनामिका त्रिपाठी

पत्नी श्री एन.के. त्रिपाठी सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

एक दिन मैं शाम को ग्वालियर के सूर्य मंदिर गयी थी। वहां चारों तरफ लोग घूम रहे थे। यहां गर्मी के दिनों में शाम का समय बहुत ही सुन्दर और सुहावना लगता है। मंदिर के प्रांगण में सूर्य भगवान के मंदिर के अलावा चारों ओर हरियाली ही हरियाली रहती है जो मन को प्रफुल्लित कर देती है। चारों ओर रंग-बिरंगे खिले हुए फूलों की खुशबू मन को आनंदित कर देती है। मैं और मेरी सहेली, मंदिर और उसके प्रांगण का अवलोकन कर रहे थे। कुछ युवा लड़के-लड़कियां हाथ में हाथ डाले घूम रहे थे, कुछ बैठ कर आपस में बातें कर रहे थे तथा कुछ आपस में प्यार का इजहार कर रहे थे। एक स्थान पर कुछ जोर-जोर से आवाज आ रही थी, जो हमारे कानों तक अस्पष्ट सुनाई दे रही थी। मेरी सहेली ने कहा कि चलो देखते हैं कि ये इतनी जोर से क्या बात कर रहे हैं। मैंने कहा नई उम्र के बच्चे हैं, अपने हिसाब से बातचीत कर रहे होंगे। मैंने कहा, अब चलो, मंदिर दर्शन कर लेते हैं, तभी उन बच्चों को पता नहीं क्या लगा, पास आकर बोले आंटी नमस्ते! मैंने भी बोला, नमस्ते बेटा। औपचारिकता पूरी होने पर वह लड़का बोला, आंटी, मेरा नाम रवि है और मैंने तकनीकी शिक्षा प्राप्त की है। लड़की जिसका नाम आरती था, वह बोली, मैंने व्यावहारिक शिक्षा प्राप्त की है। उसने बताया कि मेरे और रवि के बीच इसी बात को लेकर बहस चल रही है। दोनों ने कहा कि इस पर आप हमारी कुछ मदद कर सकती हैं। मैंने कहा कि प्रयास करूंगी, यदि हो सकी तो जरूर करूंगी।

तभी रवि बोला, आंटी आप समझदार लगती हैं, आप ही हमारी समस्या का समाधान कर सकती हैं। मैं अपनी सहेली के साथ रुककर बोली। आप लोग बतायें कि आपकी समस्या क्या है?

शुरुवात आरती ने की कि मैं घर में रहकर घरेलू जीवन जीना चाहती हूँ तथा आसपास के माहौल में रहकर सामाजिक कार्य भी करना चाहती हूँ, जिससे मैं एक सामाजिक एवं व्यावहारिक जीवन जीने की कला सीख सकूँ। तभी रवि बोला कि मैंने बी.टेक किया है और मैं इंफोसिस कंपनी में एक अच्छे पैकेज पर कार्य कर रहा हूँ। मैंने रवि और आरती दोनों की बातों को ध्यान से सुना, समझा तथा दोनों के मनोभावों को देखकर दोनों का हौसला बढ़ाया। फिर कहा कि आप लोगों में इसे लेकर बहस क्यों हो रही थी?

आरती ने कहा कि आंटी मेरे माता-पिता रवि से मेरा रिश्ता करना चाहते हैं। इसलिए हम दोनों आपस में बात करने के लिए यहां आये हैं, जिससे हम एक-दूसरे को जान सकें, ठीक प्रकार से समझ सकें। लेकिन हम दोनों में तकनीकी शिक्षा और व्यावहारिक शिक्षा को लेकर विवाद चल रहा था।

रवि ने कहा कि मुझे एक नौकरीपेशा लड़की चाहिए थी, लेकिन यह नौकरी नहीं करती है और यह व्यावहारिक शिक्षा और घरेलू तथा सामाजिक जीवन को ही महत्व देती है। यह जीवन को घर और परिवार में किस तरह जिया जाये, उस कला को सीख रही थी। आंटी अब आप ही बताइये घरेलू जीवन जीना भी कोई सीखने की कला है। जीवन तो हर मनुष्य अपने हिसाब से जीता है, लेकिन इस व्यावहारिक ज्ञान से धन की प्राप्ति तो नहीं होती। आंटी इसे बताइये कि जीवन जीने के लिए धन चाहिए। लेकिन आरती का मन अभी नौकरी करने में नहीं था। आरती मुझे बहुत अधिक पसंद है, पर मैं इससे शादी नहीं कर सकता। मैंने पूछा, क्यों? रवि बोला, आंटी यह तकनीकी ज्ञान से अधिक व्यावहारिक ज्ञान को महत्व देती है।



मैंने और मेरी सहेली ने दोनों की बातों को बड़े ध्यान, धैर्य तथा तन्मयता से सुना। मुझे भी घर के लिए देरी हो रही थी। फिर मैंने सोचा कि अगर मेरे प्रयासों से दोनों की समस्या ठीक हो जाती है तो अच्छा होगा। इस बीच मेरी सहेली ने आरती से कहा कि अब तुम भी अपनी बात बताओ। हम रवि के विचार तो जान चुके थे।

मैंने आरती के सिर पर हाथ रखा और बोला - बेटा अब अपने विचार रखो। आरती ने अपनी बात बड़ी गंभीरता से कही। आंटी आप तो जानती होंगी कि आजकल सभी लड़कियां पढ़-लिखकर सिर्फ नौकरी करने की इच्छा रखती हैं। लेकिन गृहकार्य से अनभिज्ञ रहती हैं। मैंने अपनी बुआ जी और फूफा जी को देखा, दोनों अकेले रहते हैं। दोनों मिलकर लाखों रुपये महीने में कमाते थे, लेकिन घर में हमेशा कमी ही बनी रहती थी। मेरी बुआ जी को चाय तक बनाना नहीं आता, वह हर कार्य के लिये नौकरों पर आश्रित रहती थी। वेतन का आधे से अधिक पैसा नौकरों-चाकरों में चला जाता था। इतना पैसा होने के बाद भी आपस में घर में कलह होती रहती थी। जब वे दोनों सुबह घर से निकलते और शाम को जब घर आते तो इतना थक जाते कि एक-दूसरे से बात-बात में झगड़ते थे, जिससे मन अशांत रहता था। बच्चे नौकरों के भरोसे पलने के कारण जिद्दी हो गये थे। उन्हें बचपन से माँ-बाप का प्यार नहीं मिला, जिससे वह अपनी उम्र से अधिक बड़े हो गये थे। वे सारा दिन टी.वी. या मोबाइल देखते रहते तथा नौकरों द्वारा बोले जाने वाले अपशब्दों को बोलने लगे, जबकि वे उन अपशब्दों का मतलब तक नहीं जानते थे। जब उनसे पूछा कि इन शब्दों का मतलब जानते हो? तो वे बोले कि भैया (नौकर) बोलते हैं तो हम भी बोलेंगे। उनका पढ़ने में भी ज्यादा मन नहीं लगता। माता-पिता के प्यार की कमी हमेशा रहती थी। दूसरी तरफ मेरी माँ है जो केवल पाँचवी पास है मेरे पिताजी बैंक में नौकरी करते हैं। उनकी वेतन से हम भाई-बहनों का खर्चा तथा घर का खर्चा होने के बाजवूद कुछ बचत भी हो जाती है। मैंने अपनी माँ को देखा है कि वह अपने सारे कार्य तरीके से करती हैं। किसी भी चीज को बरबाद नहीं करती। मैंने अपनी उम्र में माँ और पिताजी को किसी बात पर झगड़ते नहीं देखा। मेरी माँ और पिताजी बहुत अच्छे से रहते हैं। उन्होंने हम भाई-बहनों की परवरिश बहुत अच्छे से तथा अच्छे संस्कारों से की है। माँ, हम भाई-बहनों को अच्छा ज्ञान देती रहती है। आज मेरा भाई डॉक्टर है, मेरी बड़ी बहन तकनीकी शिक्षा में पारंगत है। मेरी बहन भी माँ की तरह व्यावहारिक है उसने भी सामाजिक और व्यावहारिक ज्ञान सीख लिया है। वह भी जीवन में हर प्रकार से सुखी है।

आरती रुकी नहीं, वह बोलती ही जा रही थी। मुझे भी उसका बोलना पता नहीं क्यों बहुत अच्छा लग रहा था। उसकी सोच और उसके विचार बहुत अच्छे थे। वह रुकी नहीं, थोड़ा गला साफ करके बोली कि मेरी माँ का कहना है कि सुख धन से नहीं खरीदा जाता, जीवन जीने की कला से सुख आता है। वह पूरे जोश के साथ बोल रही थी। एकदम रुकी और बोली आंटी अब आप ही बताइये कि मैं कहाँ गलत हूँ।

बहुत देर हो गयी थी, खड़े-खड़े थक गई थी। मैं और मेरी सहेली बहुत ही धैर्य से सारी बात सुन रहे थे। मैं बोली चलो थोड़ी देर सीढ़ी पर बैठते हैं, फिर आगे बातें करते हैं। फिर हम सब ने प्रसाद खाकर पानी पिया। उन दोनों की बात सुनने के पश्चात् उसका विश्लेषण करने का समय था।

मैंने रवि से पूछा रवि बेटा, आप घर का काम जानते हो, जैसे बिस्तर ठीक करना, चाय बनाना, घर के फैले हुए सामान को व्यवस्थित रखना, नहाने के बाद तौलिया एवं अपने कपड़ों को धूप में डालना आदि।

रवि एकदम से खड़ा हो गया, अरे आंटी आप यह किस तरह की बात कर रही हो, यह सब काम लड़के नहीं करते। मुझे यह सब कुछ नहीं आता। मेरे घर में मेरी माँ, बहन और नौकर यह काम करते हैं।

मेरी सहेली ने कहा शादी के बाद जब अपनी पत्नी के साथ अकेले रहोगे तो यह सारा काम कौन करेगा। रवि ने तपाक से उत्तर दिया 'मेरी पत्नी'। तब मेरी सहेली ने कहा बेटा जब तुम घर का कोई काम नहीं कर सकते तो पत्नी ही क्यों यह भूमिका निभाये। बेटा नौकरों के

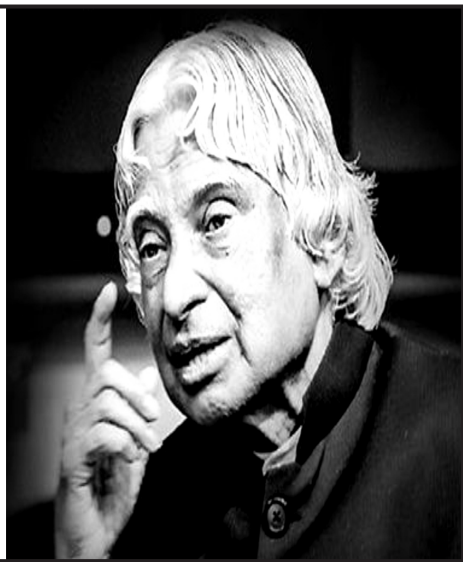


भरोसे घर नहीं चलते, ऐसे घरों में सदैव कलह बनी रहती है। बच्चे संस्कारी नहीं बनते। इस कलयुग में लोग पैसे को अधिक महत्व देते हैं। जिसके कारण उनका जीवन जीते जी नरक बन जाता है और आने वाला भविष्य भी बिगड़ जाता है। मैंने बड़े आश्चर्य से आरती को देखा फिर बोली, 'इक्कसवीं सदी में आरती जैसी लड़की को देखकर आश्चर्यचकित हूँ। यह कितनी गुणी, शिक्षित और समझदार है। इस लड़की से विवाह करके तुम्हारा जीवन खुशियों से भर जायेगा और आने वाली पीढ़ी भी संस्कारी होगी और बेटा कोई भी काम स्त्री-पुरुष के लिये बंटा नहीं होता। जिस तरह स्त्री दोहरी भूमिका निभाती है, वैसे ही पुरुष को भी दोहरी भूमिका निभानी चाहिए।' मैंने रवि से कहा कि वैसे हम तुम्हारे जीवन का कोई फैसला तो नहीं कर सकते, लेकिन यदि तुम अपने जीवन को सुन्दर और सुखमय बनाना चाहते हो तो आरती से शादी कर लो और जीवन जीने की कला सीख लो फिर चाहे दोनों नौकरी करो, जीवन सदैव सुख शांति से व्यतीत होगा।

रवि को मेरी बातें बुरी लग रही थीं पर उन सब बातों में सच्चाई थी। रवि ने मेरे और मेरी सहेली के चरण स्पर्श किये और बोला आंटी आपने मेरी आंखें खोल दीं अब मैं आरती से ही विवाह करूँगा। आरती ने भी कहा मैं भी व्यावहारिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद नौकरी करूँगी। दोनों एक-दूसरे को देख कर खुश हुये और दोनों ने मिलकर मुझे धन्यवाद दिया और बोले आंटी आपने हमारी बहस का समाधान निकाला उसके लिये धन्यवाद। आप हमारी शादी में जरूर आना। मैंने भी हामी भर दी।

यदि हम स्वतंत्र नहीं हैं
तो कोई भी हमारा
आदर नहीं करेगा।

- डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम





साहब का सत्य से साक्षात्कार



आकाश सिंह

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

यह कथा एक कार्यालयीन पृष्ठभूमि से संबंधित है, जो कार्यालय में अधिकारियों एवं कर्मचारियों के बीच स्थापित हुए सामंजस्य एवं उनमें आयी गिरावट के परिप्रेक्ष्य में है। यह कथा इस बात को अपने में समाहित किये हुए है कि कैसे स्थितियाँ और परिस्थितियाँ हमारे व्यक्तिगत व्यवहार को प्रभावित करती हैं, फिर इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप क्या हैं, और क्या नहीं।

रमेश जी ने एक वर्ष पूर्व ही कार्यालय में नये अधिकारी के रूप में कार्यग्रहण किया था। रमेश जी के हाव-भाव, व्यक्तित्व एवं कार्य करने की अद्वितीय शैली के चलते कार्यालय के समस्त कर्मचारियों में यह संदेश पहुंचने लगा था कि साहब बहुत ही होनहार एवं ईमानदार अधिकारी हैं एवं कार्य करने के प्रति उनका जुनून भी प्रेरणा स्रोत है। यह मानव स्वभाव ही है कि जब भी किसी नयी चीज़ से रूबरू होता है या किसी भी अन्य माध्यम से उसके संपर्क में आता है, तो न केवल उस चीज़ के संबंध में अधिकाधिक जानकारी एवं ज्ञान एकत्रित करने में जुट जाता है, बल्कि एकत्रित किये हुए इसी ज्ञान एवं अपनी समझ के आधार पर उसका मूल्यांकन करने में भी लग जाता है। रमेश जी के प्रकरण में भी यह अवधारणा अछूती न थी और अनुमान के अनुसार रमेश जी कहीं से भी कम साबित न हुए, चाहे फिर बात उनके कार्य करने की शैली की हो या फिर अपने अधीनस्थ एवं अन्य वरिष्ठ कर्मचारियों के प्रति उनके सौहार्द एवं विनम्रता पूर्ण व्यवहार की। हर क्षेत्र में उनकी उपस्थिति सराहनीय एवं प्रेरणादायक ही थी। कार्यालय का एक वर्ग जो कर्मनिष्ठ एवं कार्य के प्रति ईमानदार प्रवृत्ति का था, साहब के उक्त गुणों से काफी कुछ सीख रहा था, जबकि वहीं दूसरी ओर एक ऐसा वर्ग भी था, जो कुछ भी अच्छा या नया सीखने के इतर आलस और कामचोरी को ही ज्यादा तवज्जो देता था, और साहब के आगमन से भी ज्यादा खुश नहीं था। होता भी कैसे! धीरे-धीरे उनके आलस और आराम में अब खलल जो पड़ने लगी थी।

साहब मेहनती एवं कर्मनिष्ठ लोगों को पूरा सम्मान देते थे, और प्रत्येक कर्मचारी से बिना अपने पद एवं रुतबे का अभिमान किये सम्मानपूर्वक बात करते थे, परन्तु कहते हैं ना कि परिस्थितियाँ सदैव एक सी ही नहीं रहतीं, और वे खासकर उन लोगों को अपनी चपेट में जरूरी लेती हैं, जो कुछ कर गुजरने का विशेष ज़ज्बा रखते हों और साहब भी कुछ ऐसी ही प्रतिभा के धनी थे। दरअसल हुआ कुछ यूँ कि जहाँ एक तरफ कार्यालय के आलसी और अकर्मठ वर्ग द्वारा साहब की विनम्रता और ढील का अनुचित लाभ उठाया जाने लगा, वहीं दूसरी ओर साहब की कार्यकुशलता एवं कार्य के प्रति विशेष जुनून को देखते हुए बड़े अफसरों द्वारा उनको अतिरिक्त जिम्मेदारियाँ सौंपी जाने लगीं। आरम्भ में तो साहब ने उक्त सौंपी गयी अतिरिक्त जिम्मेदारियों एवं उक्त अकर्मठ वर्ग को अपने व्यक्तिगत स्वभाव पर हावी नहीं होने दिया, परन्तु धीरे-धीरे समय बीतने के साथ-साथ अधिक कार्यालयीन बोझ एवं अन्य अनजाने कारणों के चलते न केवल साहब की कार्यशैली प्रभावित होने लगी, अपितु उनके व्यक्तिगत व्यवहार में भी परिवर्तन आने लगा और ऐसा होना बहुत स्वभाविक भी था, क्योंकि एक सीमा के बाद हर चीज़ की अधिकता खराब ही होती है और कहीं न कहीं विनाश का कारण बनती है। प्रत्येक प्राणी का मूल स्वभाव है कि वह आज़ादी पसन्द है और जब-जब उसकी आज़ादी का अतिक्रमण होता है वह अपने बर्ताव को ज्यादा देर तक सकारात्मक रखने में असमर्थ महसूस करने लगता है, फिर चाहे वह अतिक्रमण भौतिक स्तर पर हो या मानसिक स्तर पर, अवस्था का ज्यादा महत्व नहीं रहता। अतः काम के अत्यधिक बोझ एवं लापरवाह और अकर्मठ कर्मचारियों के चलते साहब के व्यक्तिगत स्वभाव



में भी दिन-प्रतिदिन गिरावट आने लगी, जिसका अहसास उनके नजदीकी कर्मचारियों को भी होने लगा। जो साहब कर्मचारियों के प्रति नरम और विवेकशील हुआ करते थे, वे अब काफी कठोर और संवेदनशील हो चले थे, जो पहले वरिष्ठ कर्मचारियों की उम्र का लिहाज कर उनकी गलतियों पर भी उन्हें आदरपूर्वक समझाने का काम करते थे, वही साहब अब उनसे काफी रोषपूर्वक एवं कठोर बर्ताव करने लगे थे, और कभी कभार तो आपे से बाहर हो अमर्यादित शब्दों तक का प्रयोग कर बैठते थे। वे साहब, जो कर्मचारियों के बीच लोकप्रिय एवं प्रेरणा का स्रोत हुआ करते थे, अब धीरे-धीरे अप्रिय होने लगे थे। ऐसा इस वजह से नहीं था कि वे अब पहले से ज्यादा गुस्सा करने लगे थे या बात-बात पर फटकार लगाने लगे थे, बल्कि इस वजह से था कि साहब अब अपने विराट व्यक्तित्व और शब्दों की गरिमा की भी लाज नहीं रख रहे थे। धीरे-धीरे समस्त कर्मचारी उनके स्वभाव के चलते उनसे रूबरू होने तक से कतराने लगे थे। पीठ पीछे साहब की बुराईयाँ होने लगी थीं और जो लोग उनकी तारीफें करते नहीं थकते थे, उनके बदले हुए बर्ताव के प्रति नाराजगी व्यक्त करने लगे थे। कुछ समय पूर्व तक जहाँ सब कुछ प्रियकर था, अब अप्रियकर हो चला था और इसी क्रम में एक दिन साहब को अपने किसी स्रोत के माध्यम से पता चलता है कि एक वरिष्ठ कर्मचारी जिनका नाम मोहन था और जो कुछ समय पूर्व तक साहब के सहायक के रूप में पदस्थ थे, अन्य लोगों से साहब के विषय में काफी भला बुरा कहता है। साहब, जिनके व्यवहार में अब काफी परिवर्तन आ चुका था और जो अब पूर्णतः व्यावहारिक हो चले थे, अपने संबंध में ऐसा सुनते ही न आव देखे न ताव, फौरन ही श्रीमान मोहन को बुलावा भिजवा बैठे। ऐसा होना लाजिम था, जो कतई आश्चर्य का विषय भी न था। अपने संबंध में बुरा सुनकर साहब इस कदर आग बबूला हुए बैठे थे, मानो उनके क्रोध का कोई ठिकाना ही न हो, वे यही कहे जा रहे थे, एक अदना सा कर्मचारी जो मेरे नीचे कार्य करता है मुझे भला बुरा कहे ! उसकी इतनी हिम्मत ! उसकी हैसियत ही क्या है, जो मेरे लिये ऐसा बोले...

श्रीमान मोहन कार्यालय के एक वरिष्ठ एवं कर्तव्यनिष्ठ कर्मचारी थे और साहब का बुलावा आते ही फौरन उनसे मिलने चल पड़े। रास्ते में उन्हें इस बात का अंदेश तो हो चुका था कि बात कुछ सामान्य नहीं है, क्योंकि जिस तरह से उन्हें बुलवाया गया था, वो तरीका थोड़ा असामान्य था। साहब, जो पहले से ही आग बबूला हुए बैठे थे, ने मोहन जी को देखते ही चिल्लाना और फटकार लगाना शुरू कर दिया, क्या हो तुम? वे पुनः जोर देकर बोले, क्या हो तुम? तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई मेरे पीठ पीछे मेरे विषय में उल्टी सीधी बात करने की, तुम्हारी हैसियत ही क्या है, जो मेरे विषय में बात करो? क्या समझते हो तुम अपने आप को? मैं चाहूँ तो तुम्हारा नौकरी करना मुश्किल कर सकता हूँ, ये कर सकता हूँ, वो कर सकता हूँ, इत्यादि, इत्यादि....

मोहन जी सारा समय बिल्कुल सौम्यता के साथ निरुत्तर खड़े रहकर साहब की फटकार सुनते रहे, और जैसे ही साहब ने उन्हें डांटना बंद कर बाहर निकल जाने का आदेश दिया, उन्होंने विनम्रतापूर्वक कुछ कहने की अनुमति मांगी। मोहन जी भरी आवाज़ में हाथ जोड़कर उत्तर देते हुए बोले सर यह मेरा ही नहीं अपितु प्रत्येक कर्मचारी का दायित्व है कि वह अपने उच्च अधिकारी का आदर करे, उनका पूर्ण सम्मान करे। यह बिल्कुल सत्य है कि मैं आपके समक्ष सदैव सम्मानपूर्वक व्यवहार ही करता हूँ, आप जहाँ भी मिलते हैं, जब भी मिलते हैं आदरपूर्वक आपका अभिनन्दन करता हूँ, फिर चाहे आप अभिनन्दन स्वीकार करें या न करें, आप जो भी कार्य सौंपते हैं उसका पूरी ईमानदारी और लगन के साथ निर्वहन करता हूँ। सर, मैं व्यक्तिगत रूप से आपके कार्य करने की शैली से काफी प्रभावित हूँ.... मगर जहाँ तक बात रही पीठ पीछे आपके विषय में उल्टी-सीधी बात करने की, तो मैं यही कह सकता हूँ कि बात पूर्णतः सत्य नहीं है। मैं अपने सहकर्मियों और मित्रों के संग आपकी बुराई नहीं करता हूँ, अपितु आपके व्यक्तित्व के हर एक पहलू पर चर्चा करता हूँ, जिसमें आपसे जुड़ी प्रत्येक बात आती है, हर एक चीज़ आती है, जैसे कि कार्य करने के प्रति आपका जुनून, आपकी निष्ठा एवं ईमानदारी, उसके साथ ही दुर्भाग्यवश आपके आचरण एवं व्यवहार में अपने अधीनस्थों के प्रति आयी गिरावट भी शामिल है। सर, निश्चित ही जिस किसी ने भी आपके संदर्भ में मेरे वक्तव्यों को आपके समक्ष बयां किया है, वह इन्हें अवश्य ही पूर्णतः न सुन पाया



होगा, या फिर ऐसा हो सकता है कि उसने जिस लहजे में आपको ऐसा बयाँ किया हो वह लहजा मेरे वाले लहजे से भिन्न हो, परन्तु ये सत्य है कि मैंने ऐसा भी कहा... मैं पूरी ईमानदारी से कहता हूँ कि मैंने ऐसा कहा। इतना सुनते ही साहब बिल्कुल सन्न रह गये, उन्हें कतई इस बात की उम्मीद न थी कि श्रीमान मोहन अपना कहा इतनी सरलता से और बिना हेर-फेर के स्वीकार करेंगे, वे तपाक से बोले क्या मतलब है तुम्हारा? मोहन जी ने पुनः दोहराते हुए उत्तर दिया साहब मैं पहले भी कह चुका हूँ, मैं जब भी आपके समक्ष होता हूँ आदरपूर्वक ही पेश आता हूँ, जो न केवल मेरा कर्तव्य है, बल्कि कार्यालयीन शिष्टाचार भी है, परन्तु सर, 'किसी शख्स के पीठ पीछे लोग उसके विषय में क्या बात करते हैं, उसके व्यक्तित्व के संबंध में क्या राय रखते हैं, इन सब बातों का निर्धारण तो केवल उस अमुक शख्स के आचरण, और दूसरों के प्रति उनके द्वारा मन, वाणी और कर्म से किये गये बर्ताव पर ही निर्भर होता है, और यह बात जितनी सत्य है उतनी ही शाश्वत और प्रामाणिक भी। सर मुझे खेद है, परन्तु सत्य यही है कि आज केवल मेरी ही नहीं, बल्कि कार्यालय के हर एक कर्मचारी की जुबान पर आपके व्यवहार में आये परिवर्तन की चर्चा है और ऐसा इसलिए है क्योंकि आप हम सबमें आला है, हम आपका अनुकरण करते हैं। सर, निश्चय ही आपके शासकीय ज्ञान एवं ऊँचे रुतबे के आगे मेरी कोई हैसियत नहीं है। यह भी सत्य है कि आप चाह लेंगे तो सच में मेरा नौकरी करना मुश्किल कर देंगे, परन्तु मैंने कुछ जान-बूझकर नहीं किया, बल्कि मैं तो अपने मानवीय स्वभाव से मजबूर हूँ। जिसे आप बुराई समझ रहे हैं, दरअसल वो आपके संदर्भ में की जाने वाली मात्र आम चर्चा है, जिसमें आपके हर एक पहलू का जिक्र होता है, यह एक प्रक्रिया है जो पहले भी होती थी, अभी भी होती है और मेरे और आपके बाद भी होती रहेगी और ऐसी चर्चाएँ हर जगह, हर स्थान पर होती हैं। फिर भी मैं आपके समक्ष इस बात को सहजता से स्वीकारता हूँ कि मैंने पीठ पीछे आपके हर एक पहलू पर चर्चा की, आप चाहें तो मुझे दोषी समझ सकते हैं।'

यह सब कुछ सुनने के बाद रमेश जी (साहब) और भी हतप्रभ हो चुके थे, उन्हें इस बात का एहसास हो चुका था कि कार्य तो सर्वोपरि है ही, परन्तु उससे सर्वोपरि है आत्मीयता, मानवता एवं शिष्टता। बड़ा पद बड़ी जिम्मेदारी लेकर आता है, और एक कुशल इंसान की यही पहचान है कि वह कैसे अपने दायित्वों का निर्वहन प्रतिकूल परिस्थितियों में भी न केवल होशपूर्वक करना जारी रखता है, बल्कि साथ ही औरों की अदृश्य परिस्थितियों को भी समझ कर उन्हें भावनात्मक पुष्टि प्रदान करने का प्रयत्न करता है।

रमेश जी एक शानदार शख्सियत के मालिक थे, और कमियाँ हर एक इंसान में होती हैं। एक कुशल और विद्वान इंसान की पहचान इसी बात से होती है कि वह कितनी तीव्रता से अपनी कमियों की प्रकृति में परिवर्तन करता चला जाता है। यहाँ, रमेश जी भी अकर्मठ और कर्मठ अधिकारियों की मनोदशा में विभेद करने में चूक गये थे, और सबको एक ही चाबुक से हांकने लगे थे। फिर भी परिस्थितियाँ कुछ भी रही हों, रमेश जी सबके प्रेरणा स्रोत थे और यह तथ्य उन्हें समझना चाहिए था कि लोग उनका अनुसरण करते हैं, उनका हर एक कृत्य चर्चा का विषय बनेगा ही। मोहन जी के उक्त वक्तव्य उनको यह एहसास करा चुके थे कि हम किसी के दिल में या पीठ पीछे जगह केवल अपने सकारात्मक रवैये से ही बना सकते हैं, न कि पद या रुतबे के दम पर, और इस बात की पुष्टि उनकी बदली हुई भाव-भंगिमा से हो चुकी थी।

सार - यह अटल सत्य है कि हम पद, पैसे और रुतबे से कितने ही बड़े क्यों न बन जाएं, लोग हमें किस तरह और कब तक याद रखेंगे, इस बात का निर्धारण केवल हमारा व्यक्तिगत आचरण ही करता है। पद, पैसों और रूतबों का क्या! आज हैं कल नहीं, अधिक से अधिक 20-30 साल, परन्तु आपका आचरण कैसा है, आपका स्वभाव कैसा है, आप कुछ बोलने या फिर करने के पहले उसे कितनी गहराई से परखते हैं यह बात अत्यधिक महत्वपूर्ण है। यह तो एक कथा मात्र थी, जिसमें रमेश जी को बड़ी शीघ्रता और सहजता से अपने व्यवहार में आये परिवर्तन का पता चल गया, परन्तु असलियत में हम लोग पद और पैसे के पीछे भागते-भागते, और खुद को औरों से श्रेष्ठ दिखाने की दौड़ में (कि मैं कुछ अलग हूँ, मेरे करने से ही सब कुछ हो रहा है आदि आदि) इतने भावशून्य होते चले जाते हैं कि अपने इन्सान होने का असली आनन्द ही बिसरा देते हैं और अन्ततोगत्वा अपने जीवन को अकेला और नीरस बना बैठते हैं।



नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), ग्वालियर

केंद्रीय सरकार के देश भर में फैले हुए कार्यालयों/उपक्रमों/बैंकों आदि में राजभाषा के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने और राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के मार्ग में आ रही कठिनाइयों को दूर करने के लिए एक संयुक्त मंच की आवश्यकता महसूस की गई, ताकि वे मिल बैठकर सभी कार्यालय/उपक्रम/बैंक आदि चर्चा कर सकें। फलतः नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के गठन का निर्णय लिया गया। इन समितियों के गठन का प्रमुख उद्देश्य केंद्रीय सरकार के कार्यालयों/उपक्रमों/बैंकों आदि में राजभाषा नीति के कार्यान्वयन की समीक्षा करना, इसे बढ़ावा देना और इसके मार्ग में आई कठिनाइयों को दूर करना है।

इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु ग्वालियर, म.प्र. में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), ग्वालियर कार्यरत है। प्रधान महालेखाकार का कार्यालय (लेखा परीक्षा-प्रथम) नराकास, ग्वालियर का सचिवालय है। वर्तमान में नराकास, ग्वालियर के अध्यक्ष, प्रधान महालेखाकार श्री डी. साहू एवं सचिव, उप महालेखाकार श्री जितेंद्र तिवारी हैं।

दिनांक 26.11.2019 को श्री डी. साहू जी की अध्यक्षता में नराकास, ग्वालियर की 82वीं अर्धवार्षिक बैठक संपन्न हुई। बैठक में 44 सदस्य कार्यालयों से कुल 75 अधिकारियों/कर्मचारियों ने अपनी उपस्थिति दर्ज की। बैठक का आरंभ नराकास, सचिव श्री जितेंद्र तिवारी के उद्बोधन के साथ हुआ, जिन्होंने 30 सितंबर 2019 को समाप्त छमाही के हिंदी के प्रगामी प्रयोग से सम्बन्धित प्रतिवेदनों की समीक्षा का वाचन किया। उसके पश्चात माननीय अध्यक्ष महोदय श्री डी. साहू द्वारा उपस्थित समस्त सदस्य कार्यालयों के अधिकारियों/कर्मचारियों का व्यक्तिगत परिचय लिया गया तथा अधिकारियों/कर्मचारियों के साथ चर्चा की गई। बैठक में माननीय अध्यक्ष महोदय श्री डी. साहू द्वारा वर्ष 2018-19 के लिए राजभाषा कार्यान्वयन एवं उत्कृष्ट पत्रिका प्रकाशन हेतु निम्नलिखित पुरस्कार प्रदान किए गए-

1. पत्रिका पुरस्कार

(1) वर्ष में एक से अधिक अंक प्रकाशित करने वाले कार्यालय -

- प्रथम - 'वीरांगना' - कार्यालय महालेखाकार (लेखा. एवं हक.) द्वितीय, मध्यप्रदेश, ग्वालियर (शील्ड एवं प्रशस्ति पत्र)
- द्वितीय - 'दर्पण' - कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा. एवं हक.) प्रथम, मध्यप्रदेश, ग्वालियर (प्रशस्ति पत्र)

(2) वर्ष में एक अंक प्रकाशित करने वाले कार्यालय -

- प्रथम - 'प्रेरणा' - कार्यालय रक्षा अनुसंधान एवं विकास स्थापना, मध्यप्रदेश, ग्वालियर (शील्ड एवं प्रशस्ति पत्र)
- द्वितीय - 'श्रेय' - प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम) का कार्यालय, मध्यप्रदेश, ग्वालियर (प्रशस्ति पत्र)
- तृतीय - 'सुरभि' - केंद्रीय विद्यालय क्रमांक-01 मध्यप्रदेश, ग्वालियर (प्रशस्ति पत्र)

2. राजभाषा कार्यान्वयन में उत्कृष्टता प्रदर्शित करने वाले कार्यालय -

- प्रथम - कार्यालय महालेखाकार (लेखा. एवं हक.) द्वितीय, मध्यप्रदेश, ग्वालियर (शील्ड एवं प्रशस्ति पत्र)
- द्वितीय - कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा. एवं हक.) प्रथम, मध्यप्रदेश, ग्वालियर (प्रशस्ति पत्र)
- तृतीय - प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम) का कार्यालय, मध्यप्रदेश, ग्वालियर (प्रशस्ति पत्र)
- प्रोत्साहन पुरस्कार - (1) कार्यालय अधीक्षण अभियंता, राष्ट्रीय जल विकास प्राधिकरण, मध्यप्रदेश, ग्वालियर (प्रशस्ति पत्र)
- प्रोत्साहन पुरस्कार - (2) कार्यालय केंद्रीय प्रशिक्षण महाविद्यालय, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल, मध्यप्रदेश, ग्वालियर (प्रशस्ति पत्र)

बैठक के दौरान स्वल्पाहार वितरित किया गया व पुरस्कार वितरण के उपरान्त अध्यक्ष महोदय की अनुमति से सचिव महोदय के समापन भाषण के साथ बैठक संपन्न घोषित की गई।



संयुक्त हिंदी सप्ताह समारोह 2019

प्रतियोगिता परिणाम

काव्य-पाठ प्रतियोगिता		
1.	प्रथम	श्री साकेत कुमार बघेल, (03/10829)
2.	द्वितीय	श्री उपेन्द्र यादव (02/6823)
3.	तृतीय	श्री हरिओम कुमार (03/11380)
निबंध प्रतियोगिता		
1.	प्रथम	श्री नीरज कुमार (04/10600)
2.	द्वितीय	श्री विकास सिंह (02/10852)
3.	तृतीय	श्री साकेत कुमार बघेल (03/10829)
पत्र लेखन प्रतियोगिता		
1.	प्रथम	श्री नीरज कुमार (04/10600)
2.	द्वितीय	श्री पंकल अग्रवाल (04/11330)
3.	तृतीय	श्री भरत कुमार शिवहरे (03/10777)
अप्रत्याशित प्रतियोगिता		
1.	विजेता	श्रीमती आत्मा श्रीवास्तव (02/10473)
2.		श्री अमित तायल (04/11210)
3.		श्री अंकित कुमार (03/11125)
4.		श्री अमित तायल (04/11210)
अनुवाद प्रतियोगिता		
1.	प्रथम	श्री अमित कुमार सिंह (04/10890)
2.	द्वितीय	श्री शाहमीर खान (05/11223)
3.	तृतीय	श्री प्रतिपाल सिंह (02/11001)

हिंदी तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता		
1.	प्रथम	श्री शाहमीर खान (05/11223)
2.	द्वितीय	श्री हरिओम कुमार (03/11380)
3.	तृतीय	श्री यशवर्धन गुप्ता (04/11331)
वर्णानुक्रम प्रतियोगिता		
1.	प्रथम	श्री आशीष कुमार विश्वकर्मा (03/10671)
2.	द्वितीय	श्री अमित कुमार सिंह (04/10890)
3.	तृतीय	श्री अर्जुन लाल यादव (03/11294)
अंत्याक्षरी प्रतियोगिता		
1.	विजेता	श्रीमती अन्नू बेदी (03/10354)
		श्रीमती अनीता गोयल (03/10484)
2.	उप-विजेता	श्री शाहमीर खान (05/11223)
		श्री मंजीत लाकड़ा (05/11078)
वाद-विवाद प्रतियोगिता		
1.	प्रथम	श्री शाहमीर खान (05/11223)
2.	द्वितीय	श्री साकेत कुमार बघेल (03/10829)
3.	तृतीय	श्री यशवर्धन गुप्ता (04/11331)
प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता		
1.	प्रथम	श्री राहुल कुमार (05/11319)
2.	द्वितीय	श्री श्याम बाबू गुप्ता (02/10301)
3.	तृतीय	श्री कपिल कांत पाराशर (04/11235)

कार्यालय पत्रिका 'श्रेय' वर्ष 20018-19 में चयनित उत्कृष्ट रचना -

1. 'वैतरणी पार' (पद्य) - सुश्री दीक्षा चौहान
2. 'लैपटॉप-एक व्यंग्य कथा' (गद्य) - श्री अभिषेक त्रिपाठी



कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम) मध्यप्रदेश, ग्वालियर

वर्ष 2019-20 में कार्मिकों की नियुक्ति की सूची			
क्रमांक	नाम	पदनाम	कार्य ग्रहण तिथि
1.	सुनील दत्त शुक्ला	लेखापरीक्षक	09.07.2019
वर्ष 2019-20 में कार्यालय से सेवानिवृत्त हुए कार्मिकों की सूची			
क्रमांक	नाम	पदनाम	सेवा निवृत्ति तिथि
1.	पी.जे. गर्वाशीष	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	मई 2019
2.	प्रकाश चंद्र गुप्ता	पर्यवेक्षक	
3.	मुकेश कुमार गुप्ता	पर्यवेक्षक	
4.	लल्लू सिंह कुशवाह	लेखापरीक्षक	
5.	नरेश कुमार जैन	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	जुलाई 2019
6.	भूरे खान	एम.टी.एस.	अगस्त 2019
7.	मोहन सिंह राठौड़	लेखापरीक्षक	अक्टूबर 2019
8.	यशवंत सिंह	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	दिसम्बर 2019
9.	महेश	एम.टी.एस.	
10.	सुरेश कुमार कुशवाह	एम.टी.एस.	
11.	जोसेफ पी.एम. पूतनपरमपिल		जनवरी 2020
12.	प्रेमवती अहिरवार	एम.टी.एस.	
13.	श्रीकांत देशमुख	लिपिक	फरवरी 2020
वर्ष 2019-20 में कार्य के दौरान असामयिक मृत्यु			
क्रमांक	नाम	पदनाम	
1.	वासुदेव चाँदवानी	एम.टी.एस.	

आपके अभिमत आपके पत्र



महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित वार्षिक हिन्दी पत्रिका 'श्रेय' के 23वें अंक की प्राप्ति हुई है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र अत्यन्त आकर्षक और मनमोहक है। साथ ही पत्रिका की साज-सज्जा भी बहुत सुन्दर है। कविताएं एवं लेख भी भावपूर्ण, सार्थक तथा मन को छू ले वाली हैं। श्री उपेंद्र सिंह यादव द्वारा लिखित लेख 'अमरीन', श्री दीपक देवलिया द्वारा रचित दो रचनाएँ- 'प्रभु नाम के कल्याण' व 'नजरिया अपना-अपना', श्रीमती सृष्टि सिंह द्वारा लिखित लेख 'वक्त का चक्र', श्रीमती लालसा यादव द्वारा लिखित कविता 'मेरे हमसफर', श्री जगत पाल सिंह 'जगत' द्वारा लिखित कविता 'डोली में दुल्हन', श्रीमती अनामिका त्रिपाठी द्वारा लिखित कहानी 'अपने पराये', श्री अभिषेक त्रिपाठी द्वारा लिखित कहानी 'लैपटॉप-एक व्यंग्य कथा', श्री हरिओम कुमार द्वारा रचित 'गजल' श्री आकाश सिंह द्वारा लिखित लेख 'आस्तिक-हम-नास्तिक और धर्म' तथा श्री कृष्ण बाथम द्वारा लिखित लेख 'त्याग ही शाश्वत जीवन है' सर्वाधिक रोचक एवं शिक्षाप्रद हैं। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएँ।

भवदीय - व. लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी कक्ष
कार्यालय प्रधान महालेखाकार

आपके कार्यालय द्वारा वार्षिक हिन्दी पत्रिका 'श्रेय' के 23वें अंक की प्रति इस कार्यालय को प्राप्त हुई जिसमें पत्रिका का आवरण एवं साज-सज्जा, मुद्रण भी अति उत्तम है। सुश्री सृष्टि सिंह, लेखा परीक्षक का लेख 'वक्त का चक्र' व श्रीमती अनामिका त्रिपाठी, पत्नी श्री नवल किशोर त्रिपाठी, सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी व लेख 'अपने पराये' अत्यन्त ही प्रशंसनीय है।

पत्रिका में प्रकाशित रचनाएं ज्ञानवर्धक, लाभप्रद तथा पूर्ण रूप से पठनीय हैं। श्रेष्ठ सम्पादन के लिए पत्रिका परिवार को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका की अविरल प्रगति तथा विकास हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय - मुकेश कुमार यादव, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (रा.भा.)
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय व्यय), नई दिल्ली

महोदय,

आपको कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'श्रेय' के 23वें अंक की प्रति प्राप्त हुई, एतदर्थ आभार।

पत्रिका का मुख पृष्ठ एवं पृष्ठों की साज-सज्जा अत्यन्त आकर्षक एवं मनमोहक है। यह पत्रिका राजभाषा हिन्दी के विकास की दिशा में किया गया एक सफल प्रयास है। पत्रिका की प्रत्येक रचना रोचक, ज्ञानवर्धक एवं सामाजिक चेतना से परिपूर्ण है। वैसे भी सभी रचनाएँ प्रशंसनीय हैं पर विशेष रूप से लेखों में श्री मदन गोपाल शर्मा का लेख 'शोर' सेहत का प्रभावित करता है' शोर से होने वाले विनाशकारी प्रभावों को संक्षेप में बताता है, जो कि काफी उत्कृष्ट है। सृष्टि सिंह का लेख 'वक्त का चक्र' समय की महत्ता को बखूबी बताता है। श्री आकाश सिंह का लेख 'आस्तिक - हम- नास्तिक और धर्म' में आज के समाज में फैली अंध-भक्ति के विभिन्न पहलुओं को दर्शाया गया है, जो कि सराहनीय है। कहानियों में श्री उपेंद्र सिंह यादव की 'अमरीन' तथा डॉ. रामसहाय बैरैया की कथा 'दहेज मांग ले डूबी' बेहद रोचक है।

श्री अंकित कुमार की कविता 'मैं किसान का दर्द हूँ', श्री आकाश सिंह की 'बड़ा बनते-बनते बहुत छोटा बन जाता है इंसान' एवं श्री लल्लू सिंह कुशवाहा की कविता 'क्रांति' की अभिव्यक्ति मन को छू लेने वाली है।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना सहित प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय - चन्दन कुमार बड़ई, हिन्दी अधिकारी/प्रशा. हिन्दी सेल
भारतीय लेखा तथा लेखा परीक्षा विभाग, प्रधान महालेखाकार (लेखा एं हक.) पश्चिम बंगाल



महोदय,

आपके पत्रांक प्रशासन/हिंदी कार्यान्वयन कक्ष/सम्मति/जावक-725, दिनांक 27.08.2019 के साथ पत्रिका 'श्रेय' के 23वें अंक की प्राप्ति हुई, एतदर्थ धन्यवाद।

पत्रिका की साज-सज्जा मनमोहक है। पत्रिका में अंतर्निहित समस्त रचनाएं उत्कृष्ट एवं संग्रहणीय हैं। पत्रिका का मुद्रण एवं छायांकन अति आकर्षक है। पत्रिका में मुद्रित रचनाओं की बढ़ती हुई संख्या में हिंदी के प्रति लगाव का पता चलता है जो कि सराहनीय है। सभी रचनाएं उल्लेखनीय, विचार प्रधान, प्रेरक एवं सराहनीय हैं। पत्रिका के संपादन एवं संकलन हेतु संपादक मंडल को साधुवाद तथा पत्रिका की निरंतर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय - वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी)
महालेखाकार (सा. एं. सा. क्षेत्र. ले.प.) का कार्यालय, ओडिशा

महोदय,

उपर्युक्त विषय के संदर्भ में सूचित करना है कि हिन्दी पत्रिका 'श्रेय' के 23वें अंक की 1 प्रति प्राप्त हुई, सादर धन्यवाद।

पत्रिका का कलेवर एवं उनमें समाहित समस्त रचनाएं ज्ञानवर्धक तथा रोचक है। विशेष रूप से, श्री उपेन्द्र सिंह यादव की रचना 'अमरीन', सृष्टि सिंह की रचना 'वक्त का चक्र' एवं श्री अभिषेक त्रिपाठी की रचना 'लैपटॉप', प्रशंसनीय है।

संपादक मंडल को बधाई देते हुए शुभकामनाएं हैं कि आपकी यह पत्रिका निरंतर प्रकाशित होती रहे।

भवदीय - वरिष्ठ लेखा अधिकारी/हिन्दी
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), छत्तीसगढ़

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा भेजी गई हिन्दी पत्रिका 'श्रेय' के 23वें अंक हमारे कार्यालय को प्राप्त हुआ है, तदहेतु धन्यवाद। इस अंक में समाविष्ट रचनाएं पठनीय, ज्ञानवर्द्धक एवं रोचक है। विशेषकर, श्री उपेन्द्र सिंह यादव की रचना 'अमरीन', 'श्री अभिषेक त्रिपाठी की रचना 'लैपटॉप-एक व्यंग्य कथा', श्री मनीष कुमार की रचना 'मैं और तुम' जैसी रचनाएं बहुत पसंद आई हैं। पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति की शुभकामनाओं के साथ।

भवदीय - वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी/हिन्दी प्रकोष्ठ
प्रधान महालेखाकार का कार्यालय आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखा परीक्षा ओडिशा

महोदया,

हिंदी पत्रिका 'श्रेय' के 23वें अंक की प्रति प्राप्त हुई, एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका का बाह्य आवरण तथा आंतरिक पृष्ठ सज्जा उच्चकोटि की है। पत्रिका में शामिल सभी रचनाएं रोचक, ज्ञानवर्धक तथा पठनीय हैं। इनमें किसी भी पाठक को अंत तक बांधे रखने का सामर्थ्य है।

श्री मदन गोपाल शर्मा द्वारा लिखित लेख 'शोर सेहत को प्रभावित करता है' ध्वनि प्रदूषण की बढ़ती समस्या उसके कारण और दुष्परिणामों के बारे में आम-जन का ध्यान आकृष्ट करता है। ध्वनि प्रदूषण से विभिन्न प्रकार की जानलेवा बीमारियाँ उत्पन्न होती हैं। इसमें ध्वनि प्रदूषण को रोकने और इसके दुष्परिणामों से बचने के महत्वपूर्ण उपायों पर भी चर्चा की गई है। श्री अमरेश कुमार द्वारा लिखित लेख 'लोक लेखा समिति में ऑडिट रिपोर्ट का परीक्षण' में भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक द्वारा की जाने वाली विभिन्न कार्यवाहियों के बारे में सम्पूर्ण जानकारी दी गई है, इससे हमारे विभागीय ज्ञान में वृद्धि होती है।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ।

भवदीय - पवन सिंघल, हिंदी अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (आ. एवं रा.क्षे.ले.प.), गुजरात





नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, ग्वालियर

*** प्रशस्ति पत्र ***

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, ग्वालियर द्वारा नगर में स्थित समस्त केन्द्रीय कार्यालयों/ उपक्रमों/निगमों द्वारा वर्ष 2018-19 में विभागीय हिन्दी पत्रिका का वर्ष में एक अंक प्रकाशित करने वाले कार्यालयों में 'श्रेय' के श्रेष्ठ प्रकाशन हेतु कार्यालय महालेखाकार (सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र लेखापरीक्षा) मध्यप्रदेश, को द्वितीय स्थान प्राप्त करने पर सम्मानित किया जाता है।

ग्वालियर

दिनांक :- 26.11.2019

अध्यक्ष

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, ग्वालियर

एवं महालेखाकार

कार्यालय महालेखाकार

(सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र लेखापरीक्षा)

मध्यप्रदेश



नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, ग्वालियर

*** प्रशस्ति पत्र ***

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, ग्वालियर द्वारा नगर में स्थित समस्त केन्द्रीय कार्यालयों/उपक्रमों/ निगमों द्वारा वर्ष 2018-19 में राजभाषा कार्यान्वयन में उत्कृष्ट कार्य करने हेतु कार्यालय महालेखाकार (सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र लेखापरीक्षा) मध्यप्रदेश, को तृतीय स्थान प्राप्त करने पर सम्मानित किया जाता है।

ग्वालियर

दिनांक :- 26.11.2019

अध्यक्ष

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, ग्वालियर
एवं महालेखाकार
कार्यालय महालेखाकार
(सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र लेखापरीक्षा)
मध्यप्रदेश

आपदा प्रबंधन कार्यशाला



संयुक्त हिंदी सप्ताह समारोह - 2019 : झलकियाँ



संयुक्त हिंदी सप्ताह समारोह - 2019 : झलकियाँ



गणतंत्र दिवस समारोह - 2020



कार्यालय को सम्बोधित करते हुए प्रधान महालेखाकार महोदय



उप महालेखाकार द्वारा
प्रधान महालेखाकार महोदय
का स्वागत

सेवानिवृत्त कर्मियों
के साथ
प्रधान महालेखाकार महोदय



अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस समारोह - 2020



महिला दिवस समारोह में विशिष्ट अतिथियों सहित समस्त महिला स्टाफ



रंगारंग प्रस्तुति देते हुए

रक्तदान शिविर





नराकास, ग्वालियर की 82 वीं बैठक में माननीय अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति
एवं प्रधान महालेखाकार
श्री डी. साहू,
उप महालेखाकार श्री जितेंद्र तिवारी
को कार्यालयीन पत्रिका 'श्रेय' के उत्कृष्ट प्रकाशन हेतु
प्रशस्ति-पत्र प्रदान कर सम्मानित करते हुए।

मध्य प्रदेश राज्य के विदिशा जिले की ग्यारसपुर तहसील में एक पहाड़ी ढलान पर स्थित यह ऐतिहासिक मालादेवी मंदिर भारतीय शिल्प एवं वास्तुकला का अनुपम उदाहरण है। इसका निर्माण 9वीं शताब्दी में परमार राजाओं के द्वारा करवाया गया था। घाटी के कोने में स्थित यह मंदिर एक आभूषण की तरह दिखाई देता है। अद्वितीय नक्काशी और वास्तुकला के कारण यह मंदिर अत्यंत चित्त आकर्षक और लुभावना है।



मालादेवी मंदिर के रास्ते पर पहाड़ी की चढ़ान पर ही चार शिला खम्भों से निर्मित यह मण्डप अति आकर्षक है, जिस पर शिल्प कला की अद्वितीय नक्काशी देखने को मिलती है। मण्डप में उत्कीर्ण शंख इसके प्राचीन कालीन विष्णु मंदिर का अंश होने की पुष्टि करता है।